सतिगुर शब्द

(निहकलंक हरि शब्द भंडार चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

उह परमात्मा, जिस ने जुग चौकड़ीआं तबदील कीतीआं ते बणाईआ होईआं ने उह कदी किसे इन्सान नाल ते बुद्धि वाले नाल ते अकल वाले नाल गल्लबात नहीं करदा। प्रभू, उहदा इक्क मशवरा है सलाह है दलील है विचारधारा है करनी दा करतव है, जां खेल खेलणा है। उह आपणे सतिगुर शब्द नाल सलाह करदा है, होर किसे नाल नहीं करदा। जेहड़ा सतिगुर शब्द कदे जम्मया मरया ते नाश नही. होया। दुनियां दे नाल परमात्मा दा कोई सलाह मशवरा नहीं।

जिथ्थे पुरख परमात्मा नूं संबोधन कीता जोत दी धार ने तत्तां वाले सरीर दा नाम दा रूप धारन करके। फिर दुनियां नूं संबोधन कीता, कि ऐ मनुष्य ऐ इन्सान। श्री गुरू नानक देव जी ने संसार विच्च ऐसा मार्ग प्रसिद्ध कीता, कि कलिजुग दा कुकर्म भरिष्टाचार ते अतिआचार दा समां आ रिहा संसार पता नहीं कलिजुग किस तरीके नाल भुला देवे। पर थोड़ी जही मर्यादा कायम कीती कि सतिगुर कौण है, सतिगुर किस नूं किहा गिआ? सतिगुर नूं प्रतीत करौण वास्ता साहिबा ने आपणे जीअ ही, जोत अते शब्द दी धार भाई

लहणे विच्च रक्ख दित्ती। दुनियां नूं संबोधन कर दित्ता ऐ प्रेमीउँ प्यारयो, ऐ जगयासूयो, ऐ संसारीयो, सतिगुर शरीर नहीं है, सतिगुर परमात्मा दी ताकत है। जेहड़ी मैं आपणी शक्ती धुर तों लै के आया सा, आह मैं देवी दे पुजारी अंगद विच्च रक्ख रिहा हां और उस नूं भरभूर बणा दित्ता। गुरू अञ्जण साहिब जी ने किरपा कर दित्ती, ७२ साल दी आयू दे विच्च सेवादार ते मेहर कर दित्ती गुरू अमरदास नूं बणा दित्ता। एसे तरां जोत ते शब्द दी धार दसां जामयां तक चली गई और संसार दे विचों संसा कढ दित्ता बई जिस सरीर दे अंदर परमात्मा दी शब्द दी धार आ जावे, उह आपणी जोत दा प्रकाश रक्ख देवे, उस शरीर दा सतिकार हो सकदा है, लेकिन सतिगुरू शब्द है, शरीर सतिगुरू नहीं है। एह गुरू नानक देव जी ने फैसले वास्ते एह सारा खेल खेलया। .....

.... अवतार पैगम्बर गुरु कहन्दे ने, ऐ धरनीए, असीं सचखण्ड विच्च बैठे होए ऐस वेले दे मनुष्य ते इन्सान ने, ऐस वेले दीनां मज़हबां दी धार ने, साड्डी कमजूत नहीं कोई रहण दित्ती। साते ग्रन्थ शास्त्र साड्डे पवित्र जितने वी सन धुर दे फ़रमाण, उहनां नूं हट्टां बजार दे विच्च पैसिआं ते वेचणा शुरु कर दित्ता है। नाले साड्डे ग्रंथां नूं गुरू मन्नदे आ, मथ्थे टेकदे ने, निमस्कारां जनारदनां बन्दना ते सयदे करदे ने, नाले हट्टीआं दे विच्च उहनां नूं सौदयनं वागूं कीमतां दे उत्ते वेच दित्ता है। जिस गुरू दी कीमत पै गई, उस गुरू दा सतिकार की रह गिआ। गुरू दी कीमत कदी नहीं पै सकदी। सतिगुरू दी कीमत कोई चुका नहीं सकदा। साड्डी दशा जो हो रही है असी वेख रहे हां कि सानूं हट्टां बज़ारा दे विच्च कीमत तों वेचिआ जा रिहा है। .....

..... उह परमात्मा जिस ने जदों वी संसार विच्च नवा मार्ग लाया ए, किसे अवतार पैगम्बर गुरू नूं भेजया ए, उहनूं पिछली कथा कहाणी नहीं उहनूं कही। पिछले ग्रन्थां साशतरां नूं पढ़न वास्ते नहीं उहनूं किहा। उह जदों आया, उह नवां संदेश नवां फ़रमाण नवां नाम नवां कलमा भेजया है और उस नूं संसार अंदर प्रसिद्ध कीता है। .....
... एह सतिगुरू ते धरनीए शब्द है जिस ने बहु रूपां विच्च खेल खेलया है। असीं वी उसे दा रूप बणे हां। अवतार हां पैगम्बर हा गुरू हां, साईं उसे दी ताकत उसे दी शक्ती लै के सारा खेल होया सी। ..... (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां विच्चों)

सतिगुर शब्द मेला राम, राम रमय्या मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द घन्नया शाम, काहना बंसरी इक्क वजाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा जाम, अमृत रस इक्क चखाईआ। सतिगुर शब्द पूरन करे काम, पूरी इच्छया मात कराईआ। सतिगुर शब्द सच दए पैग़ाम, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द आत्म सच्चा देवे सच आराम, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। सतिगुर शब्द पकड़ाए दाम, दामनगीर इक्क हो जाईआ। सतिगुर शब्द साचा

रक्खे इक्को आन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द इक्क वडयाईआ।

सतिगुर शब्द सूरबीर, वड वड्डा वड वडयाईआ। सतिगुर शब्द निराला तीर, अणयाला आप चलाईआ। सतिगुर शब्द दूई द्वैती हउमे हंगता माया ममता देवे चीर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सतिगुर शब्द हउमें हंगता कढ्ढे पीड़, दुःख दर्द दए गवाईआ। सतिगुर शब्द आत्म मारे सच ज़ंजीर, प्रेम गंढुण इक्को पाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आख़र सतिगुर मेल मिलाईआ।

सतिगुर शब्द गा गा थक्के पीर फ़कीर, पैगम्बर ढोला इक्को गाईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग घत्ते वहीर, लोकमात वेस वटाईआ । सतिगुर शब्द बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द सच सतिगुर तस्वीर, नूर नूराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक्क समझाईआ।

सतिगुर शब्द नाम प्याला, मधुर रस इक्क प्याइंदा। सतिगुर शब्द दीन दयाला, दीनन आपणे गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द सदा रखवाला, एथे ओथ्थे दो जहान सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रितपाला, बण प्रितपालक सेव कमायदां। सतिगुर शब्द मार्ग दस्से इक्क सुखाला, औझड़ राह पन्ध मुकाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे शाह कंगाला, राओ रंक राज राजान एका दर बहाइंदा। सतिगुर शब्द देवे सच फ़रमाना, धुर दी धार आप वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा नाम, वस्त अमोलक झोली पाइंदा।

साचा नाम सतिगुर प्यार, प्यार प्यार विच्च मिलाईआ । सतिगुर शब्द नाद धुन जैकार, सति सति शनवाईआ। सतिगुर शब्द काग़ज़ कलम ना लिखणहार, लेखा लिख लिख सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर शब्द दो जहानां वसे बाहर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन मण्डल चरनां विच्च रखाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, समुंद सागर उच्चे टिल्ले परबत खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को नाम आदि जुगादि वरताईआ।

सतिगुर शब्द सदा बेअन्त, अन्त कहण कोई ना पाईआ । सतिगुर शब्द साचा कन्त, गुरमुख सुरत सवाणी लए परनाईआ। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मणीआ मंत, मन वासना दए गवाईआ । सतिगुर शब्द नाता तोड़े लक्ख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत दए जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा चुकाए हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े भुक्ख नंगत, सच भंडार झोली पाईआ। सतिगुर शब्द बोध अगाधा पंडत, निशअक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे जेरज अंडत, उत्भुज सेतज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द नाम निधान, निशअक्खर धार चलाइंदा। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। सतिगुर शब्द ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सच निशान, धर्म निशाना इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए आत्म राम, परमात्म आपणी गंढु पवाइंदा। सतिगुर शब्द वखाए सच भूमका असथान, गृह मन्दर सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश कोटन भान, रव सस नैण शरमांयदा। सतिगुर शब्द जिस सतिगुर देवे आण सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सो सन्त सो भगत सो गुरमुख सो हरिजन चतर सुजान, मूर्ख मूढ़े आपणे धंदे लाइंदा। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार शैतान, शहनशाह आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम जिस जणाइंदा। (२६ माघ २०१६ बिक्रमी)

सतिगुर शब्द चार वरन मीता, मित्र प्यारा सर्ब अखवाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अतीता, त्रैभवण धनी आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द त्रैगुण ठंडा करे अंगीठा, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। सतिगुर शब्द जणाए सच प्रीता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सतिगुर शब्द इक्को घर वखाए हस्त कीटा, कीट हसत इक्को दर बहाइंदा। सतिगुर शब्द भेव जाणे जीव जीअ का, गृह गृह आपणा आसण लाइंदा। सतिगुर शब्द वड नीकन नीका, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा।

सतिगुर शब्द सदा सदा सच, सच सुच वडयाईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए काया माटी कच, कंचन रूप वटाईआ। सतिगुर शब्द तत्तव तत्त बुझाए अंच, अगनी पोह ना सके राईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां हिरदे अंदर जाए रच, रोम रोम समाईआ। सतिगुर शब्द सच दवारे रिहा नच्च, आत्म अन्तर सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे आप जणाईआ।

सतिगुर शब्द साचे मन्दर, घर घर विच्च सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए डूंघे खण्डर, प्रकाश प्रकाश आप धराईआ। सतिगुर शब्द मेट मिटाए चांदना चन्दर, रव सस माण गवाईआ। सतिगुर शब्द मन वासना मारे बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए डूंघी कंदर, कुण्डा आपणी हत्थीं लाहीआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सतिगुर शब्द सच्चा सज्जण, घर साचे मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द कराए मज़न, दुरमत कूड़ी मैल धवाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए साचा हाजी हज्जण, काअबा इक्को इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां रक्खे लज्जण, लाजावन्त इक्क हो जाइंदा। सतिगुर

शब्द साचा भजन, भव सागर पार कराइंदा। सतिगुर शब्द पड़दा पाए नंगण, ढाकण कू पत इक्क अखवाइंदा। सतिगुर शब्द काया माटी बणाए कंचन, कंचन पारस नाल छुहाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश जोत निरञ्जण, जोती नूर डगमगाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक्क सुणाइंदा।

सतिगुर शब्द अगम्मी नाद, सुर ताल ना कोई वडयाईआ। सतिगुर शब्द ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द सन्त सतिगुर साध, गुर गुर वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द लेखा बोध अगाध, खाणी बाणी वंड वंडाईआ। सतिगुर शब्द सदा विस्माद, बिसमल आपणा खेल चलाईआ। सतिगुर शब्द दो जहानां खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच्च धराईआ। सतिगुर शब्द मण्डल मंडप पाए रास, पृथ्मी आकाश गोपी काहन नचाईआ। सतिगुर शब्द गुर अवतार बणाए शाख़, पीर पैगम्बर आपणा अंग बणाईआ। सतिगुर शब्द लक्ख चुरासी करे वास, घट घट आपणा डेरा लाइंदा । सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी ना होए विनास, अबिनाशी आपणी धार वखाइंदा। सतिगुर शब्द सच संदेसा देवे ख़ाश, ख़ाहश सभ दी पूर कराइंदा। सतिगुर शब्द समाए पवण स्वास, उणंजा पवण सेवा लाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा लाए त्रिलोकी नाथ, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द विष्न ब्रह्मा शिव देवे साथ, साचा संग निभाइंदा । सतिगुर शब्द आदि जुगादी पूजा पाठ, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए तीर्थ ताट, सरोवर मठ आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द पार किनारा घाट, साचे पतण डेरा लाइंदा। सतिगुर शब्द जन्म जन्म दी मेटे वाट, पूरब लहणा झोली पाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां अगम्मी दात, अलख अगोचर आप वरताइंदा। सतिगुर शब्द मेटे रैण अन्धेरी रात, चौदस चन्न इक्क चमकाइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म साची गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जीव जंत लक्ख चुरासी करे घात, काल महांकाल आपणा हुक्म जणाइंदा। सतिगुर शब्द हो दयाल बणे दास, दासी दास बण बण सेव कमाइंदा । सतिगुर शब्द कदे ना होए नरास, निराशा रूप ना कोई धराइंदा। सतिगुर शब्द बिन गुरमुखां कोई ना सके भाख, खोजिआं हत्थ किसे ना आइंदा। सतिगुर पूरा जिस जन खोल्हे अन्तर आख, निझ नेत्र आप खुल्हाइंदा। तिस नज़री आए साख्यात, स्वछ सरूपी रूप वटाइंदा। सो गुरमुख होए पारजात, परम पुरख मेल मिलाइंदा। मुरीद मुशर्द प्याए आब हयात, सद खुमारी इक्क जणाइंदा। हरिजन हरि हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक्क समझाइंदा।

सतिगुर शब्द खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सतिगुर शब्द गुरसिख मेला बाप बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर गुरसिखां करे भेटा, आपणी दया झोली पाईआ। सतिगुर शब्द काया पंज तत्त अंदर लपेटा, नज़र किसे ना आईआ । सतिगुर शब्द आदि जुगादी जाणे लेखा, लिखया लेख भुल्ल ना जाईआ । सतिगुर शब्द मुछ दाढ़ी ना कोई केसा, मूंड मुंडाया नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर शब्द रहे हमेशा, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। सतिगुर शब्द सच नरेशा, शाह पातशाह इक्क अखवाईआ। सतिगुर शब्द सदा सद चलाए आपणा पेशा, पेशवा पेशतर आपणा हुक्म मनाईआ। सतिगुर शब्द

सदा सद सद आदेशा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द देवणहार वडयाईआ।

सतिगुर शब्द दाता दातार, दयावान अखवाइंदा। सतिगुर शब्द बाल बिरध जवान, बुढ्ढे नढ्ढे करे इक्क प्यार, मात गर्भ वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द ईश जीव दस्से सच विहार, विवहारी आपणी कार कमाइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मेला नार कन्त भतार, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाइंदा। सतिगुर शब्द पारब्रह्म ब्रह्म मीत मुरार, मित्र प्यारा इक्क अखवाइंदा। सतिगुर शब्द रागाँ नादां वसे बाहर, सारंग सरंगा भेव कोई ना पाइंदा। सतिगुर शब्द छत्ती राग कर ना सकण विचार, विचारयां विचार विच्च कदे ना आइंदा। सतिगुर शब्द शास्त्र सिमरत सिफ्त सालाही करन कार, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त समझाइंदा। सतिगुर शब्द सभ तों वसे बाहर, पुस्तक आपणी ना कोई वखाइंदा। सतिगुर शब्द निशअक्खर धार, अक्खर आपणी वंड वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो शब्द शब्द सार, सार गुरमुखां आपे पाइंदा।

सतिगुर शब्द शब्द सार, सार किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द शब्द अगम्मी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द शब्द प्यार शब्द शब्द करे कुड़माईआ। सतिगुर शब्द शब्द धुनकार, धुनकार शब्द शनवाईआ। सतिगुर शब्द वसे धाम नयार, धाम नयार महल्ल अट्टल अट्टल इक्क वडयाईआ। सतिगुर शब्द सच उजिआर, उजिआर नूर नूर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, आधार आधार इक्को आस जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा लेखे लाए तेई अवतार, अवतार अवतार आपणे हुक्म भवाईआ। सतिगुर शब्द भगत अठारां कर पसार, पसर पसारी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द ईसा मूसा मुहम्मद खोल किवाड़ कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द नानक गोबिन्द दए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाणी बाण जणाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि धुरदरगाही कलाम, कातब कोई लिख ना सके राईआ। सतिगुर शब्द सच अमाम, आमद आपणी आपणे हत्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग चौकड़ी बदल देवे नज़ाम, नौबत आपणा डंका नाम वजाईआ। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तम जन भगतां बणे ग़ुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले विरले पाण, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। सो सतिगुर गुर शब्द ग़रीब निमाणयां देवे आण, निरगुण सरगुण झोली भराईआ। जींवदिआं जग करे कल्याण, मरयां दुःख ना लागे राईआ। लेखा चुक्के जगत मसाण, साढ्ढे तिन्न हत्थ भूमी वंढ्ढ ना कोई वंढ्ढाईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर गुरमुख गोदी चुक्के आण, वेले अन्त होए सहाईआ। सतिगुर शब्द सोहँ ढोला जो जन गाण, गावत गा गा खुशी मनाईआ। घर भगत मिले भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। आत्म परमात्म सिदक सबूरी सच देवे ईमान, अमानत आपणा नाम झोली पाईआ। सति सति सति वखाए निशान, निशाना इक्को इक्क झुलाईआ। जो जन गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो नाम सतिगुर अनडिठड़ा झोली पाईआ। (२९ माघ २०१९ बिक्रमी)

शब्द गा गा थक्के पीर फ़कीर, पैगम्बर ढोला इक्को गाईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग घत्ते वहीर, लोकमात वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द सच सतिगुर तस्वीर, नूर नूराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक्क समझाईआ। (१३—५८५)

पुरख अकाल कहे, अन्त कल वेख वखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सरनी ढहे, फड़ बाहों गले लगावांगा। चार कुण्ट दह दिशा जो भगत सुहेला भाणा सहे, परदा उहला आप उठावांगा। जो हरि सरनाई सतिगुर चरनी बहे, फड़ बाहों गले लगावांगा। झगड़ा चुका के तूं ते मैं, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ावांगा। प्रेम प्रीती अंदर कर के लै, मसत खुमारी इक्क वखावांगा। सतिगुर पूरा शब्द इक्को है, पंज तत्त नाता जगत तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मार्ग इक्क लगावांगा। (१९—११८)

पुरख अकाल कहे, अन्त कल वेख वखावांगा। गुर अवतार पैगम्बर सरनी ढहे फड़ बाहों गले लगावांगा। चार कुण्ट दह दिशा जो भगत सुहेला भाणा सहे, परदा उहला आप उठावांगा। जो हरि सरनाई सतिगुर चरनी बहे, फड़ बाहों गले लगावांगा। झगड़ा चुका के तूं ते मैं, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ावांगा। प्रेम प्रीती अंदर कर के लै, मसत खुमारी इक्क वखावांगा। सतिगुर पूरा शब्द इक्को है, पंज तत्त नाता जगत तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मार्ग इक्क लगावांगा। (१९—११८)

नारद कहे जन भगतो उह की तुसां सरीर नूं सतिगुर कहणा, जो जगत रहण ना पाईआ। उह की तुसां तत्तां दे कोल बहणा, तन वज़ूद वेखो चाईं चाईंआ। सभ नूं पता रहे एह काया दा बुरज़ जरूर ढहणा, जगत जहान नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर शब्द शब्द शब्द सद रहणा, जिस नूं जन्मे जन्मे जन्मे कोई ना माईआ। जिस नूं तुसीं वेख नहीं सकदे नाल नैणां, उह बिन नैणां तों तुहानूं वेखे थाउँ थाईंआ। उह तुहाड्डा साहिब नहीं तरफैण, अतीता इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप कराईआ। (२३—१३४३)

सतिगुर दाता गहर गम्भीर, गुर इक्को इक्क अखवाइंदा। जिस दी नज़र ना आए तस्वीर, नूर नुराना डगमगाइंदा। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र विच्च ना कोई टिकाइंदा। जो मंज़ल चोटी चढ़े अख़ीर, हक़ मुकामे डेरा लाइंदा। सचखण्ड साचे बहे पीरां दा पीर, पुरख अकाला सोभा पाइंदा। सो आदि अन्त जुगा जुगन्त बणौंदा रहे तदबीर, तकदीर दीन दुनी मेट मिटाइंदा। जिस दा नाम खण्डा तिक्खी धार शमशीर, शमअ लक्ख चुरासी गुल कराइंदा। जिस दा राह तक्कदा गिआ कबीर, काया काअबा वेख खुशी मनाइंदा। सो जन भगतां प्यावणहारा नाम सच्चा सीर, शीरख़ार बच्चे आपणी गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि एथ्थे ओथ्थे दो जहानां दस्तगीर, आत्म परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाइंदा।

(१९—२३०)

सतिगुर पूरा कोटन कोट ब्रह्मण्डां करे इक्क प्यार, कोटन कोट ब्रह्मा विष्न शिव दए अधार, कोटन कोट गुर पीर अवतार आपणी कुखों लए उभार, कोटन कोट एका शब्द नाम दृढ़ांइंदा। आदि जुगादी साची कार, जुगा जुगन्तर करे विच्च संसार, लोकमात वेस वटाइंदा । बिन हरि भगत दूसर जाए ना किसे दवार, गुर दर मन्दर मस्जिद मठ्ठ, सतिगुर पूरा कदे ना आसण लाइंदा। किसे ना होवे बन्द किवाड़, सति सति गंढ्ढी गंढु ना कोई रखाइंदा। किसे ना सिर रक्खे आपणा भार, सीस चुक्क चारों कुण्ट ना कोई फिराइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिसन्त आपणी गोदी लए आप उठाल। शाह कंगाल आपणे लेखे पाइंदा। एका बणया रहे दलाल, नेड़ ना आए काल महांकाल, गुर शब्दी सेव कमाइंदा। सतिगुर पूरा कोई ना बन्न के रक्खे विच्च रुमाल, अलमारी विच्च ना कोई रखाइंदा। दीन मज़्हब वरन गोत सतिगुर पूरे पवे ना कोई जंजाल, दाढ़ी मुछ केस मूंड ना मुंडाए निरगुण आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा साहिब पुरख समरथ, आपणी महिमा जाणे कथना अकथ्थ, वेद कतेब सर्ब जस गाइंदा। (०९—१००७)

भगत मिलावा एकँकार, भगवान दए वडयाईआ। साचा दाअवा विच्च संसार, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जिस दा नावां लाए आप करतार, तिस दा लेखा सके ना कोई मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, जन भगत तेरी वडयाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण नैण उघाड़, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल, सर्ब घट वासी पुरख अबिनाशी जन भगतां करे प्यार, परम पुरख आपणी प्रीती आप निभाईआ। चलो रल के सारे करीए दीदार, मिले दिलदार सच्चा माहीआ। जिस नूं दस्सदे आए सांझा

यार, सगला संग निभाईआ। सो साहिब सिरजणहार, सिर सिर रिज़क सबाईआ। कलिजुग अन्त लै अवतार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सम्बल बैठा चौंकड़ा मार, नज़र किसे ना आईआ। औकड़ पए सर्ब संसार, ओड़क होए ना कोई सहाईआ। रोकड़ रहे ना नकद उधार, ख़ाली हट्ट रिहा कराईआ। बरदे बणीए चल गुलाम, सजदा सीस झुकाईआ। परवरदिगार इक्क अमाम, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दी सच्ची सच कलाम, सोहला सच सच जणाईआ। जिस दा आदि जुगादि खेल तमाम, सो जन भगतां तमां रिहा मिटाईआ। दर दरवेश बणो करो सलाम, समां सभ नूं रिहा जगाईआ। हमां तुमां ना सके पहचान, सो पहचाने जिस आपणी अक्ख खुल्हाईआ। आदि जुगादि साहिब सतिगुर सो पुरख निरञ्जण हँ ब्रह्म देवणहारा दान विष्नूं भगवान, जग रीता जग करता जग हरता जग जीवण दाता इक्क अनेक हर घट वेख, भगत भगवान दे टेक, टिक्का मस्तक इक्को नाम लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती शब्दी धरया भेख, जोत शब्द दोवें नज़र ना आईआ। (१४—१८१)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कलिजुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाईआ। साचा मार्ग साहिब दस्स, दह दिशा करे शनवाईआ। इक्को मन्नो पुरख समरथ, अकाल पुरख वड्डी वडयाईआ। नाता तोड़ो पंज तत्त, पंज तत्त गुरू ना कोई अखवाईआ। शब्द गुरू हर घट रिहा वस, घर खोजो सज्जण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हट्टी दए जणाईआ। (१४—२०३)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

फुल्ल कहण एह बरखा अमृत धार, जन भगतां दित्ती लगाईआ। शब्द गुरू किहा, नहीं इस दे नाल सारी सृष्टी दा करना विहार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों शब्द दे शब्द सदा इख्त्यार, ते शब्द दा शब्द सदा मुखत्यार, शब्द दा शब्द सदा आगिआकार, शब्द निरगुण ते शब्द सरगुण, बिनां शब्द तों मण्डल रास विच्च रंग जगत ना कोई वखाईआ।

शब्द कहे मैं सतिगुरू मैं गुरदेव मैं सारी दीन दुनी दा बदमाश, बदी करन करौण वाला शब्द इक्क अखवाईआ। पर एह मेरा मन दे नाल कम्म ख़ास, ते बुद्धि नाल टकराईआ। ते जिस वेले मैं आत्मा नूं देवां प्रकाश, उह मेरा नूर नूर नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर, शब्द गुरू कहे, मेरे कीते नूं नहीं सके वाच, जो अंदर सुणाया, ओन्हां ने रसना गाया, कलम शाही नाल लिखवाया, लिख के सिफ्तां गए सुणाईआ। ओन्हां अक्खरां उत्ते धरवास रखवाया, जिस नूं अग्ग नाल सारे देण जलाया, उह प्रभू अबिनाशी भुलाया, जो घर घर अंदर फेरा लाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम जै जैकार कराया, जै जैकार करौण वाला नज़र कोई ना आईआ।

शब्द कहे मेरा आदि अन्त किसे ना पाया, जे किसे उत्ते किरपा कीती ओन, भगवन्त नूं कन्त कह सुणाया, नारी हो के मैं साची सेव कमाईआ। जे किसे बुत्त विच्च नूर चमकाया, ओन ओस दा मंत दृढ़ाया, अठ्ठे पहर ध्यान लगाया, साह साह रसना गाया, चरन कँवल कँवल चरन बिना चरनां तों सीस निवाया, ते शब्द गुरू कहे मै किसे दा फेर नहीं माण वधाया, जो आया सो पार कराईआ। वेखो गुरू अवतार पैगम्बर किसे दे साहमणे नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे मैं अंन्ना बोला, सुणन कुछ ना पाईआ। भेखाधारी वसां विच्च काया चोला, तत्तां विच्च सोभा पाईआ। जिस वेले चाहवां ओसे वेले आपणी धार दा बोलां बोला, अनबोलत हो के आपणा राग सुणाईआ। जे मैं कह दित्ता प्रभू मौला, ते सारयां मौला मौला कह के रौला दित्ता पाईआ। जे मैं किहा सतिनाम, ते सति सति सारे रहे गाईआ। जे मैं किहा वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू, ते वाह वा गुरू दी सारे करन वडयाईआ। ते जे मैं कहां ओस प्रभू दा कोई नाम नहीं कोई निशान नहीं ते तुसीं किस दा गौंदे ढोला, उह फेर सारे दिआं भुलाईआ। जे मैं कहां उह तक्कड़ वाला तोला, जे मैं कहां धुरदरगाह दा दूल्हा, जे मैं कहां उहदा हुक्म होवे माअकूला, जे मैं कहां उह सारयां अंदर फल्लया फूला, फेर हत्थ जोड़ के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द कहे मैं राम बण गिआ, सीता पिच्छे भज्जया वाहो दाहीआ। शब्द कहे मैं काहन बण गिआ, राधा पिच्छे बंसरी रिहा वजाईआ। शब्द कहे मैं मूसा बण गिआ, मूंह दे भार रगढ़ के नक्क दित्ता घसाईआ । शब्द कहे मैं ईसा बण गिआ, गल फासी लई लटकाईआ। शब्द कहे मैं मुहम्मद बण गिआ, कलमयां विच्च दित्ती दुहाईआ। शब्द कहे मैं नानक बण गिआ, गरीबी वेस कर के धरती कदमां नाल मिणाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द बण गिआ, खण्डा खड़ग चमकाईआ । शब्द कहे मैं सभ नूं छड्ड गिआ, शब्द शब्द विच्च समाईआ। शब्द कहे मैं सभ कुछ बण गिआ, आपे पिता ते आपे माईआ। शब्द कहे मैं ताणा तण गिआ, लक्ख चुरासी नज़री आईआ। शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्म शिव घाड़त घड़ गिआ, संसारी भण्डारी सँघारी नाउँ रखाईआ। शब्द कहे जे मैनूं तक्को ते मैं सारयां विच्च वड़ गिआ, बिना मेरे तों जींदा नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मैं अंदर काया मन्दर ते सभ दी चोटी उत्ते चढ़ गिआ, सिखर बह के आपणा आसण लाईआ । शब्द कहे मैं मूर्ख मूढ़ बण गिआ, अकल विद्या ना कोई चतराईआ । शब्द कहे मैं सभ कुछ पढ़ गिआ, मेरे पढ़ाइआं तों बिनां गुर अवतार पैगम्बर किसे नूं समझ किछ ना आईआ। सो शब्द कहे मैं पहली चेत जगत जहान दे मैदान विच्च खड़ गिआ, मदद अवर ना मंग मंगाईआ। आपणे विहार अंदर सृष्टी दी दृष्टी नाल लड़ गिआ, आपणी कार अंदर इष्टी दा रूप धराईआ। ना कदे जम्मयां ते ना कदे मर गिआ, मढ़ी गौर ना कदे दबाईआ। ना हिंदू ना सिख ना ईसाई ना मुसलम ते मैं ना किसे मज़्हब नूं चंगा कर के वरजिआ,

आओ तुहानूं सिँघासण उत्ते दिआं बठाईआ। जदों दिल कीता ओन्हां दे हत्थां विच्च फड़ा के निक्कीआं निक्कीआं पर्चीआं, बच्चयां वांग दित्ता परचाईआ। किसे नूं राम किसे नूं कृष्न किसे नूं ओम अल्ला सतिनाम दे के जगत वाला ख़र्चया, मातलोक दे राहे दित्ता पाईआ। ओन आ के उत्ते धरतिआ, धरनी धरत धवल दित्ती वडयाईआ। गुण गा के प्रीतम अरशिआ, सिफ्त दित्ती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुर कहे सारे कहन्दे मन्नो शास्त्र सिमरत वेद पुरान, अञ्जील कुरानां ध्यान लगाईआ। मैं हस्सदा फिरां बिनां मेरी किरपा किसे नूं औणा नहीं ज्ञान, पढ़यां हत्थ कुछ ना आईआ। जिंनां चिर मैं अंदर ना वड़िआ मन्दर ना चढ़या ते मेरी कौण देऊ पहचान, निज नेत्र ना कोई खुल्हाईआ। पढ़ना रसना दा गान, सुणना कन्नां दा विधान, मिलणा जिस वेले प्रभू होवे मेहरवान, बिना मेहर तों मिलण कोई ना पाईआ। ते जे कोई कहे असीं सारे इन्सान, साड्डे विच्च भगवान, असीं ओसे दा निशान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे नज़री आईआ। शब्द गुरू कहे फेर मैं कहां तुहाढ्डे ब्रह्म दी केहड़ी दुकान, ते जे तुसीं ब्रह्म ते तुहाढ्डी करे कौण पहचान, ते बेपहिचाण कवण अखवाईआ। एसे कर के मैं अक्खरां विच्च पवा दिता घमसान, अक्खरां नाल अक्खर अक्खरां नाल अक्खर, त्रैगुण माया नाल अक्खरां वाला नाम, प्रभू ने दिते लड़ाईआ। की प्रभू नूं चंगा कहोगे कि शैतान, जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां कोलों आपणे रस्ते बदला के सन्त सन्तां नाल दित्ते टकराईआ। शब्द गुरू कहे मैं आदि जुगादि सदा बलवान, बलधारी इक्क अखवाईआ। सदा रहे मेरी कमान, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। जो आया सो बण के ग़ुलाम, नफ़रां वाली कार कमाईआ। एसे कर के डण्डावत बन्दना सजदे करदे रहे सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

. . . . . .

(२१—८२९ ८३०)

सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आदि जुगादी एक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां देवे साची टेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बुद्ध करे बिबेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुरती शब्दी नाल करे नेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आत्म परमात्म कराए हेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया करे खेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो दर्शन देवे नेतन नेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर अन्तश्करन खोल्हे भेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचा लए चेत।

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी एकँकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, ब्रह्म ब्रह्माद जो वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां पावे सारा। सतिगुर सच्चा जाणीए,

लक्ख चुरासी वेखे वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां करे प्यारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम जैकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा अवतार पैगम्बर गुर देण सहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा नूर जोत उजिआरा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शब्दी नाद दए धुनकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा आदि जुगादि पसारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा अवतारा। (२६ मध्घर शहनशाही सम्मत ११)

सिर तेरे हत्थ रखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। नव सत वेख वखाएगा। अठ्ठ सठ्ठ फोल फुलाएगा। नौं दर परदा लाहेगा। दसवें जोत जोत डगमगाएगा। वरन गोत मेट मिटाएगा। जीव जंत वेख कोटी कोट, कोटन कोटां परदे लाहेगा। शब्द नगारे लगा के चोट, जीव जंत उठाएगा। कलिजुग आलणिउँ डिगे बोट, फड़ बाहों तेरी झोली पाएगा। इक्क प्रकाश कर के निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाएगा। सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर इक्को होवे बहुत, दूजा इष्ट ना कोई मनाएगा। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा सांझा यारा एकँकारा धरनी धरत धवल धौल तेरे उत्ते आपे जाए पहुंच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। (२३—८७२)

सवा गिठ एह गोबिन्द दी नीली टाकी, जिन्हां जोगीआं अभिआसीआं दे लेखा दित्ता मुकाईआ। बिनां पुरख अकाल तों दूजा रहण नहीं दित्ता साकी, सभ दे प्याले दित्ते रुढ़ाईआ। बिनां सतिगुर शब्द तों गुरू रहे ना कोई तन ख़ाकी, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। बिना परम पुरख परमात्मा तों लहणा देणा चुकाए कोई ना बाकी, बकाइदा दित्ता सुणाईआ। बिनां गोबिन्द दे अमृत जाम तों बदले ना किसे दी हयाती, जीवण विच्च जीवण ना कोई बदलाईआ। सभ नूं मन्नणी पैणी परम पुरख दी आखी, जिस गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। एह नीली सभ दी पिठ्ठ उत्ते उह टाकी, जेहड़ी टकयां नाल हत्थ कितों ना आईआ। इस विच्च ना कोई मज़्हब ते ना कोई जाति, चार वरनां दी सांझी साखी, जो नानक निरगुण सरगुण सृष्टी गिआ समझाईआ। बिनां अबिनाशी करते दिसे कोई ना मंज़ल साची, जो घाटे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण धुरदरगाहीआ। (२१—०३०)

हुक्म कहे मेरी ताअलीम, तुलबे गुरमुख नज़री आईआ। सबक दस्सां इक्क अज़ीम, आहला अदने नाल मिलाईआ। जे कोई समझे डण्डा मीम, मात पिता होवे जुदाईआ। जे कोई अक्ख खोल्ह के वेखे सीन, समां दए गवाहीआ। जे मुशर्द उत्ते करे यकीन, यका यक आपणा नूर करे रुशनाईआ। साची सिख्या विच्च करे मस्कीन, मसला इक्को इक्क समझाईआ। नेत्र रहे ना कोई नाबीन , अन्ध अन्धेर मिटाईआ। बिना सजदिउँ कहे आमीन, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। एह मार्ग धार जगत महीन, महिरम नज़र कोई ना आईआ। बिना शब्द तों प्रभ दा नहीं कोई जांनशीन, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। सतिगुर रूप ना नर ते ना मदीन, नारी पुरख नज़र कोई ना आईआ। ना चिन्ता ना ग़मगीन, खुशी ग़मी ना कोई रखाईआ। दर आयां सभ नूं करे तसलीम, बिन तसबी माला पार लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नबीआं दा नबी रसूलां दा रसूल, रसम आपणी दए समझाईआ। (१९—१८०)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पैगम्बर कहण सजदा करीए झुक, सीस ना कोई उठाईआ। जे साड्डी समझ आ गई इक्क तुक, तुरत लए मिलाईआ। साड्डा लेखा रिहा मुक्क, मुकम्मल हुक्म सुणाईआ। भगतां नूं दे के सभ कुछ, खाली सभ नूं दित्ता कराईआ। मुहम्मद कहे मैं हैरान हो गिआ जिस ने वारे आपणे सुत्त, ओस नूं आपणे नाल मिलाईआ। लुकीए केहड़ी गड्ढ, राह नज़र कोई ना आईआ। अज्ज तों साड्डा दीन दुनी दा लहणा देणा गिआ छुट्ट, छुट्टी दो जहान कराईआ। अग्गे वास्तो इक्क पवरदिगार दा धुर हुक्म सभ ने लैणा पुच्छ, आपणी पुच्छ ना कोई पवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान कर नहीं सके कुछ, बलहीण रहे कुरलाईआ। हुण इक्क आप रहणा ते इक्क ओस दा शब्द दुलारा रहणा सुत, दूजा नज़र कोई ना आईआ। सभ दे नाल शब्दी धार जाणा जुट्ट, धर्म दी धार इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करन चल्लया खुश, खुशीआं विच्च आपणा भेव खुल्हाईआ।
(२१ ०१४)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

१९) जो गुर गोबिन्द दा सिख, सिख्या विच्च सदा समाईआ। उह ज़रूर अन्तर आपणा जाणे भविख, बाहरों पुच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ । उस दे निरगुण धार अंदर निझ सरूप पए दिख, पड़दा उहला रहे ना राईआ। प्रीतम हो के मालक इक्क, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नाम निधाना दे के चिट, धुर संदेशा आप प्रगटाईआ। गोबिन्द सदा गुरमुखां दे रहिंदा विच, विछोड़े विच्च कदे ना आईआ। आदि जुगादी धुर दा पित, बालक गुरमुख गोद उठाईआ। जिस दा खेल नित नवित्त, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ।

जो गोबिन्द सिख लिआ अपना, उपमां आपणी विच्च लगाईआ। उस दा विछोड़ा रहे ना रा, दुतीआ भाउ ना कोई जणाईआ। सुरती शब्द लए समा, समापत करे बाहरो लोकाईआ। निरगुण करे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी नाद धुन शनवा, अगम्म करे पढ़ाईआ । भेव अभेदा आप खुल्हा, मेला मेले सहज सुभाईआ। सो सूरा बेपरवाह, हाज़र हज़ूरा हर घट बैठा डेरा लाईआ। दूर दुराडा पन्ध मुका, लोकमात आपणा पड़दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग सदा समाईआ।

गोबिन्द सतिगुर कदे ना विछड़े, विछोड़े विच्च कदे ना आईआ। सद गुरमुखां दी प्रेम धारों निकले, बाहरों हत्थ किसे ना आईआ। उह पूरब लेखे जाणे पिछले, कर्म दा डेरा ढाहीआ। पड़दे खोल्हे विचले, हउमें रोग गवाईआ। जो गोबिन्द दी सिख्या साची सिख लए, सो सिख सतिगुर विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दरगाहीआ

गोबिन्द सतिगुर सदा मेला, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। सुरती शब्दी खेल गुरू गुर चेला, तत्तां वंड ना कोई वंडाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर धुर दरगाही बण के सज्जण सुहेला, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। बिन गुरसिखां तों गोबिन्द कदे ना बैठे वेहला, सद गुरमुखां अंदर वड़ के आपणा झट लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ।

जेहड़ा गोबिन्द दा सिख बणया, आप आपणा गिआ बदलाईआ। उह निरगुण धारों जणिआ, नाता मात पित तुड़ाईआ। ओस निरअक्खर इक्को पढ़या, जिस दी विद्या धुरदरगाहीआ। त्रैगुण विच्च कदे ना सड़या, ममता मोह ना कोई हलकाईआ। सरन सरनाई ओस दी पढ़या, जिथ्थे मिले माण वडयाईआ। रहे भउ कोई ना डरया, भयानक रूप ना कोई प्रगटाईआ। अमृत नहावे साचे सरया, दुरमत मैल धवाईआ । गोबिन्द दा सिख सदा गोबिन्द दे घर वड़आ, विछोड़ा रहण कदे ना पाईआ। ना जींदा ना मरया, मर जीवत ओसे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर दए वखाईआ।

गोबिन्द दा सिख बणना औखा, चार वरनां समझ कोई ना आईआ। उह झगड़ा छड्ड जाए चौदां लोकां, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। उह सुण इक्क सलोका, दूजा बचन सरवण सुणन कदे ना जाईआ। उह रक्खे इक्को ओटा, ओड़क इक्को ध्यान लगाईआ। उहदे अंदर गोबिन्द दी नाम लग्गे चोटा, चोटी चढ़ के दरस दिखाईआ। ..... (२०—३३६ ३३७)

शेर सिँघ ना कोई तन वजूद माटी ख़ाकी, भगवान भगत वेख वखाईआ। आदि अन्त दा बण के साकी, जाम प्याले रिहा प्याईआ। उहनूं की कोई समझावे बाती, अकल विच्च की दृढ़ाईआ। जिस ने चार जुग गुर अवतार पैगम्बरां तन दा बणा के साथी, फेर विछोड़ा दित्ता कराईआ। अगली खेल किसे समझ ना आई बाकी, पर्दा सके ना कोई उठाईआ। जिस वेले चाहे जिध्धर चाहे ओधर बणा लए आपणे साथी, अंदर वड़ के आपणा रंग रंगाईआ। क्यों एह खेल पुरख अबिनाशी, तत्तां वाला जीव समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ।

भगत भगवान इक्को सेज, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। जिथ्थे देवे जोती तेज, नूर जोत रुशनाईआ। शब्द संदेशा देवे भेज, अगम्म नाद सुणाईआ। उथ्थे एह दो अक्खां ना सकण वेख, जिथ्थे बैठा आपणा रसीआ रस चखाईआ। पुज्ज ना सकण चार वेद, पुरान पर्दा ना कोई खुल्हाईआ। की होया जे दुनियां वाले दुनियां रहे वेख, दुनियां दी ममता विच्च दुनियां दी महिंमां विच्च आपणा आप गवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस ने आपणी करनी अज्ज तक्क नहीं दित्ती किसे अग्गे बेच, वणजारा नज़र कोई ना आईआ। जद आया ते रक्ख के आपणी सेध, निशाने आपणे गिआ चलाईआ। पुरख अकाल सच्चा सतिगुरू नहीं कोई बक्करी भेड, वाड़े विच्च फड़ के जिथ्थे कोई चाहे ओथ्थे बन्द कराईआ। एह ओस प्रभू दी खेड, जो जुग जुग आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे आपणे अगम्मे देस, दिशा लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त सभ दी वेख वखाईआ। (५ कत्तक सै सं ५ वरकशाप विच)

शब्द किहा मैं शब्दी काफ़र, गहर गम्भीर अखवाईआ। जुग चौकड़ी रिहा होर, कलिजुग होर रूप बदलाईआ। जद वेखो नवां नकोर, बिरध बाल ना रूप जणाईआ। मेरा किसे दे नाल नहीं कोई खोर, भगतां दा खोजी बण के फेरा पाईआ। गुरमुखो कोई प्रभू तुहाढ़े वरगा नहीं कठोर, जो दर आया नूं देवे दुरकाईआ। जे सच समझो तुहाढ़े अंदर वसां तुसां फेर वी नहीं जाणी लोड़, लोड़ां जगत पूर कराईआ। जदों वड़ां ते वड़ां बण के चोर, राती सुत्यां दे अंदर डाका आवां पाईआ। तुहाढ़ा ख़जाना तुसीं नहीं समझे ते ना कोई जाणे लक्ख करोड़, असंखां वाली गणत ना कोई गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। (१९—९७)

माघ कहे मैं भगतां दस्सणा सच, सहज सहज जणाईआ। गुरमुखो पड़दा लाह के

वेखो काया माटी कच्च, कचन गढ़ सुहाईआ। तुहाढ्ढे अन्तर बैठा पुरख समरथ, घर विच्च आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ। हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढ्ढे तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१९—११२)

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पीर पैगम्बरो हाजर करो लिखत, हुक्मी हुक्म जणाईआ। तुहाढ्ढा पूरा होया भविख्त, बीस इकीसा पन्ध चुकाईआ। अग्गे सभ दा पुरख अकाल होणा इष्ट, दूजा गुर ना कोई मनाईआ। ना कोई राम ते ना कोई वशिष्ट, विशिआं वाला सतिगुरू कम्म किसे ना आईआ। सतिगुरू पूरा पुरख अकाल पंज तत्त भोगे ना कदे गृहसत, जोत शब्द करे कुड़माईआ। ना कोई आसा रक्खे स्वर्ग बहिश्त, सचखण्ड सच इक्क समझाईआ। आदि जुगादि ना होवे निशट, ठीकर भन्न ना कोई वखाईआ। कूड़ी क्रिया विच्च ना होए भृष्ट, भरमां विच्च ना कोई भरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। (१९—११४)

किरपा करे दीन दयाला दीन, दयानिध दया कमाईआ। तड़फण देवे ना मच्छी मीन, अमृत बूंद स्वांती जाम प्याईआ। नाता तोड़ के त्रैगुण तीन, त्रैभवण धनी होए सहाईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, राह इक्को दित्ता वखाईआ। सतिगुर हुक्म ते सदा करो यकीन, भुल्ल विच्च भुल्ल कदे ना जाईआ। इस तों वड्डी नहीं कोई होर तालीम, जगत सिख्या कम्म किसे ना आईआ। हिरदे रक्खो ज़हिन, ज़हीन जाहर जहूर दए समझाईआ। फेर कदे ना होवो ग़मगीन, चिन्ता चिखा ना कोई तपाईआ। प्यार मुहब्बत विच्च रहणा लीन, लिव अन्तर अन्तर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे सभ नर मदीन, मुद्दा आपणे हत्थ रखाईआ। (२२—६१४)

साची सिक्खी शब्द विचार, हरि आपणी आप दृढ़ांइंदा। सत्तां दीपां दए हुलार, सतिजुग साची जड़ लगाइंदा। आपे बैठ दिल्ली दरबार, तिखी धारा इक्क वखाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी जोत अकार, लोआं पुरीआं वेख वखाइंदा। शब्द सिँघासण हरि दातार, एका

मात विछाइंदा। चतरभुज हो त्यार, अष्टभुज सेवा लाइंदा। गुरमुखां तन शिंगार, पंचम ताजा सीस टिकाइंदा। पंचम अवाजां रिहा मार, सोहँ मस्तक लेख लिखाइंदा। नाम सोटी हत्थ करतार, सृष्ट सबाई आप वखाइंदा। चरन जोड़ा अपर अपार, शब्द घोड़ा नाल रलाइंदा। आया दौड़ा विच्च संसार, कौड़ा मिट्ठा परखणहार, भेव अभेदा छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत इक्की इक्क इकल्ला नौं खण्ड पृथ्मी बणत बणाए इक्क महल्ला, सत्तां दीपां पावे सार। (६—१३३)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

नारद कहे भगतो तुसीं नहीं जाणदे प्रभू दा किस तरां दा इंतजामा, ते बन्दोबस्त किस तरां आपणे हत्थ रखाईआ। जिस ने अवतार पैगम्बर गुरू सन्त भगत बणाए आपणा गुलामा, गुलामी दे जंजीर शरअ नाल बन्न के जगत लोकमात दित्ते टिकाईआ। जदों खुशी विच्च आवे ते सचखण्ड विच्चों सुणावे, ते सतिगुर शब्द संदेशा लै के आवे, तत्तां वाले सरीर विच्च टिकावे, उह फिर अवतार पैगम्बर गुरू मुख रसना नाल गावे, ते अक्खरां दे अक्खर बणा लिखाए, ते कागज उत्ते टिकाए, ते ओसे दा ध्यान ओसे वल लगाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। (२३—५२७)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

गुर किरपा जन सेव कमाए। गुर किरपा जन, दर आए। गुर किरपा गुरसिख गुर मार्ग लाए। गुर किरपा घर नौं निध उपजाए। गुर किरपा रिध सिध गुर वस कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाए।

गुर किरपा गुर होए रखवाला। गुर किरपा गुर सद प्रितपाला। गुर किरपा गुर जोत जगाए गुरसिख ज्वाला। गुर किरपा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए आप रखवाला।

प्रभ किरपा कर भरे भंडारे। कर किरपा देवे शब्द अधारे। गुर किरपा गुरसिख आए प्रभ चरन दवारे। गुर किरपा गुरसिख गुर चरन निमस्कारे। गुरमुख साचा गुर पूरा तारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख भंजन दुःख निवारे।

प्रभ किरपा गुर वड मेहरवान। गुर किरपा जीव उपजे गुर चरन ध्यान। गुर किरपा गुरसिख करे चरन अशनान। गुर किरपा गुर देवे सोहँ नाम निधान। गुर किरपा प्रभ पाया

वड बलवान। गुर पूरा गुरसिख साचा शब्द मेल मिलाण। गुर पूरा गुरसिख दर पाईए आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख पूरा मेटे आत्म अन्ध अज्ञान। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस जोत सरूपी आण।

गुर पूरा गुर दया कमाए। गुर पूरा गुरसिख दरस दिखाए। गुर किरपा गुरसिख हरस मिटाए। गुर किरपा गुरसिख आत्म मेघ बरसाए। गुर किरपा गुरसिख आत्म तृखा मिटाए। गुर पूरा गुरमुख साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी सेवा लाए।

गुर पूरा गुर सूरा। करावे शब्द लिखावे पूरा। गुरमुख देवे नाउँ मेवा। गुर पूरा शब्द अनहद तूरा। आत्म करे भरपूरा। वड्डिआई देवे विच्च देवी देवा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बिरथा जाए ना तेरी सेवा।

गुर पूरा सिख चरनी लाग। गुर पूरा गुरसिख लगाए भाग। गुर पूरा सोहँ शब्द उपजाए साचा राग। गुर पूरा आत्म जॅत रखाए, तृष्ना काम ना पोहे आग। गुर पूरा गुरचरन सुहाए, लगाए सिख जिउँ बाशक नाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख चरनी लाग।

गुर पूरा जीव जंत उपाए। गुर पूरा गुरसिख नीव रखाए। गुर पूरा गुरमुख साचे बूझ बुझाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी मेल मिलाए।

गुर पूरा गहर गम्भीर। गुर पूरा आत्म देवे गुरसिख धीर। गुर पूरा रक्खे पत्त, अन्तकाल ना लथ्थे चीर। गुरमुख पिलाए प्रभ अमृत साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सार ना जाणे साध सन्त फ़कीर।

गुर पूरा कल जामा पाए। गुर पूरा भेख धारी सर्ब भुलाए। गुरमुखां प्रभ पूरा दिस ना आए। गुर पूरा जोत अधारी जोत रहाए। गुर पूरा प्रभ गिरधारी जामा मातलोक विच्च पाए। गुर पूरा गुर चरन बणाए। गुर पूरा हरि का दवार गुरसिख विरला नावृण जाए। गुर पूरा हउमे रोग सोहँ करे कारी, आत्म रोग सर्ब मिटाए। गुर पूरा वड दाता वड भण्डारी, नाम दान दर भिच्छया पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे आत्म जोत जगाई, गुर पूरा गुरसिख समाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम भिख्खया पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां पूरन आस कराए।

गुर पूरा गुर भगत उधारे। गुर पूरा ब्रह्म विचारे। गुर पूरा गुर जोत अधारे। गुर पूरा साचा विवहारे। गुर पूरा गुरसिख साचे पंचम जेठ साचे तिवहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच्च मात उतारे।

आवे पंचम पंचम पंचम मुख। साध संगत दिसावे साचा सुख। प्रगट जोत निहकलंक अमृत चवाए मुख। आत्म मिटाए सर्ब शंक, सुफल कराए मात कुक्ख। एक लगावे आपणे अंक, जगत तृष्ना मिटावे भुक्ख। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तरावे, गरभवास ना उपजे उलटा रुँख।

गुर पूरा गुर दातार। गुर पूरा दुखीआं भुखिआं पावे सार। गुर पूरा भोग लगाए रुँखिआं सुँखिआं, गुरसिखां जाए तार। गुर पूरा भाग लगाए दुखीआं, सर्ब जाए पैज सवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उजल करे मुखीआं, जो जन आए दरबार।

गुर पूरा पूरन मत पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे साचा सति रखाए। गुर पूरा आत्म जॅत, सोहँ बीज बिजाए। गुर पूरा गुरसिख रक्खे पत्त, चार यारां चोबदार बणाए। एका उपजावे चलावे सोहँ तत्त, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखावे।

पूरा गुर पूरन उपदेश। पूरा गुर जोत सरूपी कीआ वेस। गुर पूरा कलिजुग जामा पाया गुरसिख समाया झूठी काया वटाया भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेश।

गुर पूरा वड वड्डिआई। गुर पूरा सृष्ट भुलाई। गुर पूरा साध संगत साचा सति रखाई। गुर पूरा अन्तकाल कल सर्ब र्भिशट कराई। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचे मार्ग देवे लाई।

गुर पूरा सच मार्ग लाए। गुर पूरा सारंग धर आप अखवाए। गुर पूरा गुरदेव आप आपणी कल प्रगटाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द चलाए।

गुर पूरा सच शब्द लिखाए। गुर पूरा सृष्ट सबाई एका मार्ग लाए। गुर पूरा सोहँ साचा नाम चार वरन रखाए। गुर पूरा मात साचा थाउँ चरन धर जाए सुहाए। साचा गुर अगम्म अथाहो, निहकलक जोत सरूपी कल जामा पाए।

गुर पूरा राओ रंक इक्क कराए, आपणा हुक्म आप वरताए। गुर पूरा बैठे आप अडोल अटंक जे कोई देखे दिस ना आए। गुरसिख पूरे जोत सरूपी लाए तनक, आप आपणा दरस दिखाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कल आपणी सेवा लाए।

गुर पूरा सज्जण सुहेला। गुर पूरा विछड़यां कल कराया मेला। गुर पूरा पारब्रह्म परमेश्वर अचरज खेल आप प्रभ खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा प्रभ मिलण दा वेला।

गुर पूरा गुर मेल मिलाए। गुर पूरा अचरज खेल कल आप कराए। गुर पूरा बिन अगन तेल जोत सरूपी सृष्ट जलाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल जगत वरताए।

गुर पूरा अचरज खेल कराए। गुर पूरा सृष्ट सबाई आप समाए। गुर पूरा जामा धार निहकलंक आप आपणा वक़त सुहाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजाए।

गुर पूरे नाद धुन वजाया। गुर पूरे गुरमुख साचे आत्म सुन्न समाध खुल्हाया। गुर पूरे गुरसिख कल विरले लाध, आपणी सेव लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहणा झोली पाया।

गुर पूरा सच फल दवाए। गुर पूरा गुरसिख कर दरस सद बल बल जाए। गुर पूरा गुरसिख आत्म मेघ बरसाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस सहिँसा रोग गवाए।

गुर पूरा सहिँसा रोग गवाया। गुर पूरा सोहँ साचा जोग कमाया। गुर पूरा गुरसिख तीन लोक वडिआया। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जगत ना पोहे माया।

गुर पूरा माया अगन जलाए। गुर पूरा गुरसिख पूरे आत्म आपणी जोत जगाए। गुर पूरा गुरसिख सद रसना वाचे प्रभ सर्ब सोत खुल्हाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती मेल मिलाए।

गुर पूरा आत्म जोत जगाए। गुर पूरा गुरसिख साचे सद रहाए। गुर पूरा सर्ब कला भरपूरा, गुरमुख साचे रिहा समाए। गुर पूरा वड नूरी नूरा, एका जोत एका रंग कराए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे बुध बिबेक कराए।

गुर पूरा गुरसिख बिबेक। गुर पूरा एका बख्शे चरन टेक। गुर पूरा एका एक अकार सोहँ देवे नाम एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत अगन लावे सेक।

गुर पूरा सांतक सीतला। गुर पूरा साचा मीतला। गुर पूरा गुरसिख चरन लाग गुरमुख मानस जन्म जीतला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलावे साची रीतला।

सोहँ शब्द जग साची रीती। गुर पूरा गुरसिखां आत्म करे पुनीती। गुर पूरा कर दरस गुरमुख साचे काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं दी परखी नीती।

गुर पूरा कर्म उजागर। गुर पूरा वड वड सागर। गुर पूरा सति सति सति नागर। गुर पूरा गुरसिखां जोत जगाए झूठी देह गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कराए निर्मल कर्म उजागर।

गुर पूरा सद निराहारा। गुर पूरा कर किरपा गुरसिख पार उतारा। गुर पूरा आदि अन्त कोई ना जाणे वड पारावारा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन रखावे साचा दवारा।

गुर पूरा सच दवार। गुर पूरा पार उतारनहार। गुर पूरा देवे वड्डिआई सर्ब संसार। गुर पूरा प्रगटे जोत निहकलंक अवतार। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जाए तार

गुर पूरा दुःख भंजन। गुर पूरा चरन धूड़ देवे साचा अंजन। गुर पूरा गुर दरस जीव साचा जग मंजन। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साक सैण सज्जण।

गुर पूरा साचा सनबंध। गुर पूरा आत्म मिटावे अज्ञान अन्ध। गुर पूरा होए सहाए, जम नेड़ ना आए सर्ब कटाए फंद। गुर पूरा होए सहाए दरस दिखाए गुरसिख उपजाए सच्चा चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द मिटाए आत्म उपजाए परमानंद।

गुर पूरा सुख उपजाए। गुर पूरा दर्द दुःख मिटाए। गुर पूरा कलिजुग भुक्ख गवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा सूखम सुख उपजाए।

गुर साचा सुख उपजाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। गुर पूरा दुःख दर्द मिटाए। गुर पूरा कलिजुग अन्तम अन्त कराए। गुर पूरा सांतक सति वरताए। गुर पूरा कलिजुग झूठा खेल मिटाए। गुर पूरा गुरमुख साचे नाम दृढ़ाए। सोहँ साचा नाम सद रसना गाए। गुर पूरा मदिरा मास नष्ट कराए। अन्तकाल कल कोई रहण ना पाए। गुर साचा सति सन्तोख गुरसिख रखाए। दर दर भिक्ख कोई मंगण ना जाए। गुर पूरा कलिजुग विख आप गवाए। गुर पूरा सोहँ साची रंगण रंगाए। गुर पूरा गुरसिख साचे अञ्जण लगाए। गुर पूरा गुरसिख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सेवा लाए।

गुर पूरा सेव कमाओ। गुर पूरा कर दरस आत्म तृप्ताओ। गुर पूरा मानस जन्म सुफल कराओ। गुर पूरा लक्ख चुरासी गेड़ कटाओ। गुर पूरा आत्म नेड़ सद नेड़ वसाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे अन्तकाल कल तर जाओ।

साचा गुर दया धारी। पूरन गुर सदा निमस्कारी। साचे गुर चरन बलिहारी। कलिजुग आए पैज सवारी। साची जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारी।

साचा प्रभ जोत निरँकार। साचा प्रभ जोत सरूपी करे अकार। साचा गुर सन्त मनी सिँघ प्रभ साचे दीआ तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दीआ चरन प्यार।

साचा गुर सर्ब गुण। प्रभ अबिनाशी चरन लगाए गुरमुख चुण। साचा गुर सोहँ शब्द उपजावे धुन। गुरमुख विरला लए कन्न सुण। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जगाए जीव जंतां विच्चों चुण।

गुर पूरा एका जोत। गुर पूरा गुरसिखां चलावे एका गोत। गुर पूरा कर दरस आत्म मैल जाए सभ धोत। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जगाए आत्म जोत।

गुरसिखां आत्म जोत जगाए। गुर पूरा सोहँ साचा जाप जपाए। गुर पूरा गुरसिख सेवा विच्च घृत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक जोत जगाए।

गुर पूरा गुरसिख तरावे। गुर पूरा आत्म तृखा मिटावे। गुर पूरा गुरसिख रिख मुन उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाए।

गुर पूरा गुरसिख तारे। गुर पूरा कल खेल अपारे। गुर पूरा गुरमुख हिरदे जोत अधारे। गुर पूरा एका जोत जगाए एका एकँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच्च धारे।

गुर पूरा दया कमाए। गुर पूरा गुरसिख साचे सेव लगाए। गुर पूरा गुरसिख वड देवी देव बणाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाए।

गुर पूरा गुरसिख भंडारा। गुर पूरा देवे नाम अधारा। गुर पूरा गुरमुख साचे आत्म जोत करे उजिआरा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारा।

गुर पूरा वड देवी देव। गुर पूरा गुरसिख लगावे आपणी सेव। गुर पूरा सोहँ देवे साचा नाउँ आत्म साचा मेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना पावे भेव। (१५ विसाख २००९)

सतिगुर साचा विच्च वरभंडे। सतिगुर साचा विच्च नव खण्डे। सतिगुर साचा विच्च ब्रह्मण्डे। सतिगुर साचा साचा दान जगत विच्च वंडे। सतिगुर साचा सोहँ शब्द उठाए खण्डे। सतिगुर साचा गुरमुखां वड्डिआए विच्च वरभंडे। सतिगुर साचा बेमुखां आत्म करे रंडे। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दुःख रोग सारे खण्डे।

सतिगुर साचा सर्ब गुण। सतिगुर साचा मेल मिलाए गुरमुख साचे चुण। सतिगुर साचा आप वखाणे कोई ना जाणे प्रभ साचे दे साचे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सिख उपजावे विच्च मात जुण।

सतिजुग साचे कर्म कमावणा। गुरमुखां प्रभ आप उठावणा। जोत सरूपी दीपक आत्म विच्च जगावणा। एका जोत एका गोत रंग रंगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां सुहावणा।

सतिगुर सति सति सति वरताए। आपे सतिगुर चरन लगाए। बेमुखां प्रभ गूड़ी नींद सवाए। अद्धी नौं खण्ड विहाए। कलिजुग जीव सुंञ मसाण रखाए। गुरमुख साचे प्रभ चरन बहाए। प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन ध्यान रखाए।

सतिगुर साचा चरन ध्याना। सतिगुर देवे ब्रह्म ज्ञाना। आत्म जोत जगे महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा समां सुहाणा।

पंचम जेठ जोत जगाए वड जोधन जोध। सतिगुर साचा आपे बोध। वड वड प्रभ वड जोध। सृष्ट सबाई जाए सोध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मिटाए अन्तम औध।

सतिगुर साचा साची रुत्त। धरे जोत प्रभ अचुत। कलिजुग जीव मिटाए झूठे सुत। गुरमुख साचे प्रभ बणाए साचे पुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात दुध्ध पुत्त।

सतिगुर साचा वड्डा वड्ड दानी। सतिगुर साचा जन भगतां देवे नाम निशानी। सतिगुर साचा गुरमुख साचे बूझ बुझाणी। सतिगुर साचा आपे राजा राणी। सतिगुर साचा आपे आप होए वड ज्ञानी। सतिगुर साचा आपे देवे चरन ध्यानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद गुरमुख साचे जाणी।

सतिगुर साचा सच कर जाणो। सतिगुर साचा सतिसंग माणो। सतिगुर साचा पूरन ब्रह्म पछाणो। सतिगुर साचा दिवस रैण इक्क समाणो। सतिगुर साचा पूरन देवो माणो। सतिगुर साचा ऊँच नीच सर्ब मिटाणो। सतिगुर साचा बीचो बीच जीव जंत

समाणो। सतिगुर साचा आवण जावण गेड़ चुकाणो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मलाणो।

सतिगुर साचा जोत निरालम। सतिगुर साचा आप भुलाए सारी आलम। सतिगुर साचा गुरमुख साचे हत्थ फड़ाए कालम। सतिगुर साचा वड वड भुलाए औलीए आलम। सतिगुर साचा साची देवे मत। सतिगुर साचा देवे आत्म साचा जत। सतिगुर साचा आत्म बिजाए सोहँ साचे वत। सतिगुर साचा एका उपाए रखाए साचा तत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे साची मत। (६ जेठ २००९)

गुर पूरा कर्म विचारदा। कर किरपा पार उतारदा। जन्म मरन दा काज सवारदा। जो जन आए चरन निमस्कारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग साचे करतार दा। (१८ जेठ २००९)

सतिगुर पूरन पूरन उपदेशे, आदि जुगादि शब्द जणाईआ। जिस दी सिख्या सुणन विष्न ब्रह्मा शिव महेशे, महिखासुर आपणी खुशी बणाईआ। जिस दे अवतार पैगम्बर गुर सुणन संदेसे, बिन संध्धया सरघी रिहा दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशे, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो निरगुण सरगुण बदलणहारा भेसे, भेखाधारी अगम्म अथाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड साचे देसे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो तन वजूदां मेटणहार कलेशे, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जिस दा मुछ दाहड़ी ना कोई केसे, तन वजूद ना कोई रखाईआ। जिस दा शब्द सतिगुर दस दस्मेशे, दह दिशा वेख वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्म नर नरेशे, नर हरि इक्क अखवाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करे सहँसर मुख शेशे, शहनशाह धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा जिस दा पेशे, पेशीनगोईआं अवतार पैगम्बर गुर गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर पूरन पूरन बोल, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। स्वामी हो के वसे कोल, घर बैठा सोभा पाईआ। नाम निधान दए अनतोल, अतुल आप वरताईआ। सच दवारा देवे खोल्ह, पर्दा परदिआं विचों चुकाईआ। शब्द अनादी वजा के ढोल, सोई सुरत दए जगाईआ। बज़र कपाटी परदा खोल्ह, भेव अभेदा दए समझाईआ। निरगुण हो के निरगुण करे चोल्ह, चोजी प्रीतम रंग रंगाईआ। स्वामी हो के जाए मौल्ह, मौला हो के आपणा खेल खिलाईआ।

पंच विकार करे ना घोल, तन वजूद करे ना कोई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर पूरन पूरा, पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। आदि जुगादी धुर दा नूरा, जोती जाता अंगम अथाईआ। शब्द अनादी अगम्मी तूरा, तुरीआ बाहर दृढ़ाईआ। नित नवित्त हाज़र हज़ूरा, हज़रतां बाहर धुरदरगाहीआ। इशारा देवणहारा मूसा उत्ते कोहतूरा, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। जिस दी मसती नाम सरूरा, सुरती शब्द विच समाईआ। उह जन भगतां लहणा देणा पूरा करे ज़रूरा, ज़रूरत वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा नाम कलमा मशहूरा, सतिगुर शब्द नाल सलाहीआ। जिस दा पन्ध नहीं नेरन दूरा, दूर दुराडा इक्को रंग समाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला करनहारा मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

सतिगुर पूरन पूरन एक, एकँकार रूप समाईआ। आदि जुगादी देवणहारा टेक, इके मस्तक खाक रमाईआ। करनहारा बुद्ध बिबेक, पतित पुनीत कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। हरिजन सन्त सुहेले बणाए नेक, निक्का वड्डा वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर पूरन पूरन देवे जाप, जग जीवण दाता दया कमाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी प्रगट होए आप, आप आपणा पर्दा लाहीआ। त्रैगुण माया मेटे ताप, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जन भगत बणा के आपणी ज़ात, आत्म परमात्म संग बणाईआ। अमृत बखश के बूंद सवांत, झिरना निझर दए झिराईआ। दरस दिखाए आप इकांत, इक्क इकल्ला धुर दा माहीआ। जन भगतां पुच्छे अन्तम वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मेहरवान हो के लेखे लावे प्रेम प्यार दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाम निधाना देवे दात, अमुल आप वरताईआ। जन भगतां पुच्छे वात, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चरन प्रीती जोड़ के नात, मेल मिलाए सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बखशणहारा अमृत बूंद सवांत, तृस्ना तृखा मेटे सहज सुभाईआ। (३० माघ शहिनशारी सम्मत ११)

पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादी परवरदिगार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, इक्क इकल्ला एकँकार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, निरगुण सरगुण सांझा यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत करे उजिआर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शब्द नाद दए धुनकार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अमृत बख्शे ठंडा ठार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, पन्ध मुकाए नौं दवार।

पूरन सतिगुर आप प्रभ, जगत तृष्ना दए मार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, नाम निधाना दए खुमार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लेखा जाणे अंदर बाहर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जुग जुग भगतां दए अधार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लक्ख चुरासी लेखा दए निवार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, दरगाह साची सचखण्ड बख्शे चरन प्यार । पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी आपणी बन्ने धार।

पूरन सतिगुर आप प्रभ, अलक्ख लखीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शाहो वड परबीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो होए सहाई दीनन दीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो जन के लेखे लाए भगतां माघ महीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, प्रभ सच प्रीती दस्से मरना जीणा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, झगड़ा मुकाए लोक तीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरिजन ठांढा करे सीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरमुख प्यास बुझाए जिउँ जल मीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लोकमात प्रगटाए अगम्म नगीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी हरिजन लेख मुकाए लोक तीना, त्रैगुण माया पंज तत्त आपणे लेखे लाईआ। (१४ माघ शहनशाही सम्मत ११)

सति पुरख निरञ्जण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रूप वटाईआ । हरि पुरख निरञ्जण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन विच्च समाईआ। आदि निरञ्जण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन जोत जोत रुशनाईआ। एकँकार दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन पूर रिहा सर्ब थाईंआ। अबिनाशी करते दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रिहा प्रगटाईआ। श्री भगवान दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल विखाईआ। पारब्रह्म दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन परम पुरख वडयाईआ। शब्द सुत दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन सतिगुर इक्क अखवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरकार पूरन, पूरन पूरन पूरन हुक्म इक्क वरताईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त दा अधार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल खलाईआ। चार खाणी चार बाणी दा विहार पूरन, पूरन पूरन पूरन कल वरताईआ। लक्ख चुरासी दा उजिआर पूरन, पूरन पूरन पूरन हर घट नूर जोत रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन साची वंड वंडाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू प्यार पूरन, पूरन पूरन पूरन सभ दा पिता माईआ। निरगुण सरगुण अगम्म अथाह पूरन, पूरन पूरन पूरन निरवैर निराकार निरँकार अखवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन धर्म दी धार मीत मुरार बेपरवाहीआ। वेद पुरान शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पूरन, खाणी बाणी दो जहानी खेल अपार दृढ़ाईआ। आदि अन्त कन्त भगवन्त पूरन, पूरन पूरन पूरन आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक्क हो जाईआ ।

सो पुरख निरञ्जण सति धार पूरन, हरि पुरख निरञ्जण पूरन आप अखवाईआ। आदि निरञ्जण नूर उजिआर पूरन, पूरन एकँकार अकल कल वडयाईआ। अबिनाशी करता निराकार पूरन, । श्री भगवान पूरन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म सर्ब पसार पूरन, लाए दीबान पूरन हुक्म वरताईआ। निमस्कार गुरदेव स्वामी पूरन, सीस जगदीश पूरन सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ। (२१ ५३८ ५३९)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

बेपरवाह खेल खला, वेखे चाईं चाईंआ। रातीं सुत्यां गुरसिख लए जगा, जुगती आपणे हत्थ वखाईआ। आपणी प्रेम रत्त नाल दए नुहा, जगत नीर ना कोई रखाईआ। कर कर सेवा चढ़या साह, दिवस रैण सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी कोई वेखे ना, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा खेड़ा आपे गिआ ढाह, गुरमुखां खेड़ा रिहा बणाईआ। एसे कारन सिँघ पूरन लिआ परना, पूरन परमेश्वर विच्च समाईआ। पुत्र धीआं नाता लिआ तुड़ा, जगत मोह ना लिआ वधाईआ। गुरमुखां फड़ फड़ बांह, आपणे अग्गे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ। (११—१२५)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

गुरमुखो किते समझ ना लिओ डरामा, धुर दा निशाना रिहा जणाईआ। किते जाण ना लिओ एह पंजां तत्तां वाला इन्साना, पूरन सिँघ कह के सारे रहे गाईआ। जे समझो ते एह विष्नूं भगवाना, तुहाड्डा पिता माईआ। तुहाथों कोई खाण नूं मंगदा नहीं बदाना, बादामां नाल आपणा बल ना कोई वधाईआ। ना एह गोपीआं वाला शामा, ना बनां वाला रामा, ना पढ़न वाला कलामा, ना सलामां विच्च सीस झुकाईआ। जे वेखो शहनशाहां दा शहनशाह शाहां दा सुलतानां, सुत्यां नूं रिहा जगाईआ। अज्ज गुर अवतार पैगम्बरो उठो मैं भगतां नूं देण आया इनामा, नाम वंड के हत्थ रक्ख के कंड, कंडिआं तों बाहर लंघाईआ। (२०—२७६)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पूरन सतिगुर मन्नणा, पारब्रह्म करतार। जिस जुग जुग बेड़ा बन्नणा, बन्नणहार सची सरकार। जन भगतां बख्शे सच अनन्दना, चरन प्रीती अगम्म प्यार। निंम महकाए वास चन्दना, हरिजन साचे लए उबार। इक्को दस्से धुर दी बन्दना, इष्ट देव आप करतार।

घर स्वामी बणे सज्जणा, हरि ठाकर मीत मुरार। जिस दा अगम्मी वज्जे नदना, आत्म दए सची धुंनकार। जिस दा रूप मोहिन मदना, रंग रेख तों बाहर। जो लेखे लाए आला अदना, हरिजन बणे मीत मुरार। जो भाग लगाए काया माटी बदना, पंज तत्त करे शिंगार। जिस दा इक्को दीपक जगणा, जगत जहान होए उजिआर। उह मेटणहार शरअ दी हद्दना, आप वसे हदूदां बाहर। जिस दा कीता किसे ना रद्दना, जुग जुग पावणहारा सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लहणा देणा लेखा पूरा करे जन भगतां तत्त पंजना, पंचम मीता ठांढा सीता आपणा रंग रंगाईआ। (१४ माघ शहनशाही सम्मत ११)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पूरन सतिगुर जाणीए, हरि दाता बेपरवाह। जिस दी महिंमा अकथ्थ कहाणीए, कलम शाही चले ना कोई चतुरा। जो लेखा जाणे दो जहानीए, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड थल अस्गाह। तिस दा करीए इक्क चरन ध्यानीए, जो सदा सदा होए सहा। तूं मेरा मैं तेरा गाईए बाणीए, जो लहणा देणा दए मुका। पन्ध रहे ना चारे खाणीए, आवण जावण लहणा दए चुका। सो साहिब स्वामी जो देवणहारा अमृत रस पाणीए, पतिपरमेश्वर नूर अल्ला। आत्म परमात्म बणे हाणीए, धुर संजोगी मेल मिला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाह।

पूरन सतिगुर जाणीए, आदि अन्त भगवन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, निरगुण धार जोती कन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, जो अन्तर आत्म देवे आपणा मंत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो मेल मिलाए साची संगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो बोध अगाधा होवे पंडत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो हरिजन लेखे लाए आपणे सन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, जो बणाए साची बणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जिस दी महिंमा सदा अगणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मेरा मैं तेरा, निरगुण निरगुण दस्से आपणा छंत। (१४ माघ शहनशाही सम्मत ११)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

गुर साचा कर्म विचारदा। गुर साचा जन्म सवारदा। गुर साचा पार उतारदा। गुर साचा रंग करतार दा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , चरन लाग ना पासा आवे हार दा।

गुर साचा जोत निरँकारा। गुर साचा जोत अकारा। गुर साचा कोटन कोट खड़े दवारा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सृष्ट सबाई आपे पावे सारा।

गुर साचा गुर गोबिन्दा। गुर साचा वड गुणी गहिंदा। गुर साचा वड वड सुरपत राजा इन्दा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरा आत्म तोड़े जिंदा।

गुर साचा पूरन आसा। गुर साचा गुरमुख साचे तेरी आत्म सद निवासा। गुर साचा चरन प्रीती देवे सच भरवासा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जुगो जुग जन भगतां होए दासन दासा।

गुर साचा गहर गम्भीर। गुर साचा गुरमुख साचे तेरी आत्म देवे धीर। गुर साचा अमृत मुख चवाए शांत कराए सरीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए एका शब्द वसाए दूई द्वैत मिटाए अख़ीर।

एक मिटाए दोअं दोआ। एक वसाए सोहँ सोआ। एक दिसाए ओअं ओआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरञ्जण दूसर नाही कोआ।

गुर साचा चतुर सुजाना। गुर साचा भगत भगवाना। गुर साचा गुण निधाना। गुर साचा जोत जगाए जगत महाना। गुर साचा जोत सरूपी पहरया बाणा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आप पछाणा।

गुर साचा रूप करतार। गुर साचा सच विहार। गुर साचा शब्द अपार। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त एका एकँकार।

गुर साचा आदि अन्त। गुर साचा भेद खुल्हाए साध सन्त। गुर साचा भेव ना पाए कोई जीव जंत। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी मात बणाए आपे बणत। (१४ भादरों २००६)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

गुर पूरे सद बलिहारी। गुर पूरे सद निमस्कारी। गुर पूरे किरपा धारी। गुरमुख साचे मात लगाए सची फुलवाड़ी। आपे रक्खे लज पत्त जो चरन छुहाए दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सवारे पिछा अगाड़ी।

सच गुर चरन निमस्कारो। कर दरस पारब्रह्म गुर करतारो। सच गुर चरन बलिहारो। जन्म मरन कल गेड़ निवारो। सच गुर सच घर बाहरो। चरन लाग आत्म खोल्हो दर दवारो। सच घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंक निह नरायण नर अवतारो।

सच गुर वड सूरबीरा। गुरमुख उपजाए विच्च मात सतिजुग साचा हीरा। सच गुर सोहँ शब्द चलाए तीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच गुर, गुरसिख बन्न्हाए सिर सोहँ चीरा।

सच गुर वड पीरन पीरा। सच गुर अन्तम अन्त कल माण गवाए पीर फ़कीरां। सच गुर गुरसिखां कट्टे गलों जंजीरा। सच गुर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका शब्द देवे धीरा।

सच गुर सर्ब भरवास। सच गुर गुरमखां करे दुखड़े नास। सच गुर सच शब्द चलाए स्वास स्वास। सच गुर मानस जन्म कराए रास। सच गुर गुरसिख वड्डिआए लोक तीन विच्च मात पताल अकाश। सच गुर गुरसिखां कराए सचखण्ड निवास। सच गुर आदि जुगादि सद सदा गुरसिखां वसे पास। सच गुर दर आए सीस झुकाए कोई ना जाए निरास। सच गुर अमृत साचा सीर प्लाए, साची देवे शब्द धरवास। सच गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हउमे रोग गवाए, होए गुरसिखां दास।

सतिगुर साचा दास दसन्तर। सतिगुर साचा आप बुझाए पंचां लग्गी बसन्तर। सतिगुर साचा सर्ब जीआं दी जाणे आत्म अन्तर। सतिगुर साचा मात जपाए, सतिजुग साचा मार्ग लाए, सोहँ रखवाए साचा मंतर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई फेर बणाए साची बणतर।

सतिगुर साचा बणत बणाए। आप अगणत ना गणिआ जाए। साध सन्त कोई भेव ना पाए। बेअन्त बेअन्त सभ गए गाए। आदि अन्त ना कोई जणाए। जीव जंत कलिजुग भुल्ले रहे झूठे मरदंग वजाए। मायाधारी विच्च माया रुले, प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। गुरमुखां घर साचा खुल्ल्हे, पंचम जेठ निहकलंक मात जोत प्रगटाए। (१६ चेत २०१० बिक्रमी)

सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तम जोती दए जगाए। सतिगुर पूरा जाणीए, इका गोती दए बणाए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म सोती लए जगाए। सतिगुर पूरा जाणीए, दुरमत मैल जाए धोती दर्शन पाए। सतिगुर पूरा जाणीए, जोत सरूपी जोत हरि अवर ना दिसे कोई।

सतिगुर पूरा जाणीए, वड्डा शहनशाह। सतिगुर पूरा जाणीए, आप कटाए जम का फाह। सतिगुर पूरा जाणीए, फड़ फड़ बाहों राहे देवे पा। सतिगुर पूरा जाणीए, दरगाह साची सच मलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे निथाविआं थां। सतिगुर पूरा जाणीए, माणो ठंडी छाँ। सतिगुर पूरा जाणीए, हँस बणाए कां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट होए सच्चा दस्से शब्द नां।

सतिगुर पूरा जाणीए, कट्टे गल फासी। सतिगुर पूरा जाणीए, रसन तजाए मदिरा मासी। सतिगुर पूरा जाणीए, दरस दिखाए प्रगट होए घनकपुर वासी। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तम अन्त बन्द ख़लासी। सतिगुर पूरा जाणीए, माया ममता दर तों जाए नासी। सतिगुर पूरा जाणीए, कवण आया कल चुरासी। सतिगुर पूरा जाणीए, मानस जन्म कराए विच मात रहिरासी। सतिगुर पूरा जाणीए, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी।

सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द ज्ञान। सतिगुर पूरा जाणीए, मेल मिलाए भगत भगवान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच्चा दान। सतिगुर पूरा जाणीए, करे कराए आत्म तीर्थ इशनान। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द मारे इक्को बाण। सतिगुर पूरा जाणीए, बज़र कपाटी औखी घाटी आपे आप चढ़ान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम इक्क निधान। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म जोती आप जगाए गुरमुख आत्म आप महान। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा शब्द सुणाए कान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे चरन ध्यान। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

सतिगुर पूरा जाणीए, सदा सुखदाई। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे मात वड्डिआई। सतिगुर पूरा जाणीए, एथ्थे ओथ्थे होई सहाई। सतिगुर पूरा जाणीए, गर्भवास अन्तम अन्त दए कटाई। सतिगुर पूरा जाणीए, घट घट रक्खे वास, अन्तम होए सहाई। सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां होया दास, दरस दिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दए आप वधाई।

सतिगुर पूरा गुण निधान है। सतिगुर पूरा चतर सुजान है। सतिगुर पूरा वड्ड वड्ड मेहरबान है। सतिगुर पूरा इक्को देंदा सच्चा दान है। सतिगुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए जम की कान है।

सतिगुर पूरा जाणीए, देवे धीर धरवासा। सतिगुर पूरा जाणीए, बख्शे चरन भरवासा। सतिगुर पूरा जाणीए, रसना गाईए स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा।

सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म वेख विचार। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द सची धार। सतिगुर पूरा जाणीए, मुन सुन आप खुल्हार। सतिगुर पूरा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों

चुण, खिच्च लयाए चरन दवार। सतिगुर पूरा जाणीए, करे छाण पुण, आत्म कढ्ढे सर्ब हँकार। इक्को दस्से साचा गुण, नर हरि नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदिन अन्ता पाउँदा रहे सार।

सतिगुर पूरा जाणीए, सहज सुभाओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच्चा नाउँ है। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि इक्क अगम्म अथाहो है। सतिगुर पूरा जाणीए, वड्ड दाता बेपरवाहो है। सतिगुर पूरा जाणीए, पुरख बिधाता, गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, ना आवे किसे दाओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, आपे पिता आपे माउँ है। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे ठंडी छाउँ है।

सतिगुर पूरा जाणीए, जोत अकारया। सतिगुर पूरा जाणीए, दस्से राह सच्चा दरबारया। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म तोड़े गढ़ किल्ला हंकारया। सतिगुर पूरा जाणीए, अंदर जाए वड़ जोत जगाए अपर अपारया। सतिगुर पूरा जाणीए, दर दवारे रहे खड़्ह, देवे दरस अगम्म अपारया। सतिगुर पूरा जाणीए, पंचां चोरां नाल रिहा लड़, कढ्ढे बाहर दर दुरकारया। सतिगुर पूरा जाणीए, वेले अन्तम बांह लए फड़, सतिगुर पूरा जाणीए, साचा घाड़न रिहा घड़, गुरमुख ना भज्जण अन्तम वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्नां फड़ाए आपणा लड़, खिच्च लयाए सच दरबारया।

सतिगुर पूरा जाणीए, सच देवे मत्ती। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे धीरज सती। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे विच्चों रोग गवाए जोत टिकाए इक्को रती। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लग्गण देवे ना वा तत्ती।

सतिगुर पूरा जाणीए, सच वखानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे जोती चानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द नाउँ वड्ड ब्रह्म ज्ञानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, गुणवन्त गुण निधानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्त पछानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां देवे सोहँ सच्चा दानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा।

सतिगुर पूरा जाणीए, वड्ड दाता गहर गम्भीर। सतिगुर पूरा जाणीए, करे शांत सरीर। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत पिआए साचा सीर। सतिगुर पूरा जाणीए, बज़र कपाटी देवे चीर। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्को हाटी साची घाटी आप चढ़ाए अख़ीर। सतिगुर पूरा जाणीए, अग्गे नेड़े आई वाटी, पैणी अन्तम भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, लक्ख चुरासी विच समाए, ना कोई जाणे हस्त कीड़।

सतिगुर पूरा जाणीए, वड वड पीर। सतिगुर पूरा जाणीए, कढ्ढे हउमे पीड़। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे साची धीर। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, एका मारे शब्द तीर।

सतिगुर पूरा जाणीए, कलिजुग अन्तर। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द सच्चा गुर मंतर। सतिगुर पूरा जाणीए, जेहड़ा बणाए सची बणतर। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत इक्को गोत आदि अन्त जुगा जुगन्तर।

सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच संदेश। सतिगुर पूरा जाणीए, आवे जावे विच मात प्रगट होए सद हमेश। सतिगुर पूरा जाणीए, माण गवाए विच जहान नर नरेश। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क जोत डगमगाए, बेमुख जीवां दिस ना आए, भुल्ले फिरदे कर कर वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाया, होया माझे देस।

सतिगुर पूरा जाणीए, ना होए पखण्डी। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क दिखाए साची डण्डी। सतिगुर पूरा जाणीए, सुख साचा माणीए आत्म होए ना फेर रंडी। सतिगुर पूरा जाणीए, साची दात अठ्ठे पहिर जाए वंडी। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां ना देवे कंडी। (१४ चेत २०११)

सतिगुर पूरा सर्ब सुखदाईआ । सतिगुर पूरा गुरमुखां देवे विच मात वडयाईआ । सतिगुर पूरा मिटाए आत्म सगल वसूरा, साची देवे जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा एका शब्द देवे अनहद साची तूरा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जोत सरूपी जामा धारे वड दाता वड सूरा, ना कोई भेव रखाईआ। सतिगुर पूरा जोत सरूपी इक्को नूरा, लोकमात जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक एका शब्द वजाए डंक, फड़ फड़ उठाए राओ रंक, सृष्ट सबाई दए हिलाईआ। (१३ चेत २०११)

गुर पूरा गुण निधान है। गुर पूरा चतर सुजान है। गुर पूरा मेहरवान है। गुर पूरा देवे जीआ दान है। गुर पूरा गुरमुख विरला आए लेवे, किरपा करे आप भगवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड्ड दाता मेहरवान है।

गुर पूरा गुणी गहीर है। गुर पूरा गुरमुखां देवे साची धीर है। गुर पूरा वड्ड वड्ड पीर फ़कीर है। गुर पूरा आत्म हँकारी कढ्ढे हउमे पीड़ है। गुर पूरा जोती जोत सरूप हरि, इक्क चलाए शब्द सच्चा तीर है।

गुर पूरा गुरमुखां माण देवे शब्द सची दात विच जहान है। गुर पूरा गुरसिख तेरा

सच्चा दीनी ईमान है। कलिजुग माया विच ना रुल, ना बणना अन्त निधान है। गुर पूरा वड्डा शाहो शाह सुल्तान है। गुर पूरा दरगाह साची गुरमुख तेरे नाउँ लाए सच्चा थाउँ मकान है। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान है।

गुर पूरा गुर गोपाल। गुर पूरा दीन दयाल। गुर पूरा भगत वछल रछक किरपाला। गुर पूरा ना कोई करे बचन अद्धूरा, बण जाए मात सूरा उतरे पूरा, जोती जगे नूरो नूरा जिउँ कोहतूरा, मिल्या हरि सच्चा सर्ब कला भरपूरा ना वस्से दूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड्ड दाता वड्ड वड्ड वड्ड सूरा। (१३ चेत २०११ बिक्रमी)

हरि शब्द जन टेक, विच जहानया। गुर शब्द करे बुध बिबेक, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञानया। हरि शब्द एका एक गुर गुर गुरमुख आवे जावे देवे हरि महानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमाती जोत धर, देवे दान वड वड दानया। (१३ भादरों २०१२ बिक्रमी)

शेर सिँघ कहे मैं हो के दस्सणा शेर , शरअ धर्म धार दृढ़ाईआ । सतिगुर शब्द बण दलेर, हुक्म देणा दृढ़ाईआ। गोबिन्द धार वस के नेर, सिँघ पूरन विच्च समाईआ। पूरन सिँघ दा लेखा ना ज़बर रहे ना ज़ेर, जोती जाता इक्को रंग रंगाईआ। धर्म दी धार होवे केहर, भबक इक्को नाम लगाईआ। नव सत नूं करे ढेर, ढेरी ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां करे मेहर, मेहर नज़र उठाईआ । एका रंग रंगाए गुरू गुर चेर, चेला गुर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ। (२४—४८४)

लोगो राम पछाणो, कबीर कूके दए दुहाईआ। आपणे अंदर आपणा राम जाणो, बाहर लभ्भे ना किसे थाईआ। एका सतिगुर साचा चरन कँवल ध्यानो, धरत धवल दए वडयाईआ। गुर का शब्द मिले बबाणो, साचे राम लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर दित्ता एका वर, एका राम राजा राम आप दरसाईआ। (९—६५०

पुरख अकाल निरगुण धार, जोती जोत रुशनाईआ। पंज तत्त कर प्यार, काया माटी सोभा पाईआ। खेल मात कीता निरँकार, नां नानक दित्ता रखाईआ। धुर संदेशा दे के अगम्म अपार, अलख अगोचर दित्ता जणाईआ। शब्द अनादी दे धुनकार, अगम्मी राग सुणाईआ। कागज़ कलम शाही कर प्यार, त्रैगुण लेखा दित्ता मुकाईआ। बोध अगाधा कर विचार, अक्खरां नाल वडयाईआ। शब्द शब्द गुरू शब्द सची सच धार, धरनी धरत धवल उत्ते प्रगटाईआ। हुक्म संदेशा दे के आपणी वार, वारस गुरू एक इक्को इक्क जणाईआ। अञ्जण अमर रामदास बणे रहे लिखार, गुर अरजन सोहँ रंग चढ़ाईआ। देह जोत शब्दी चलदी रही कार, करनी करता आप कराईआ। सति सति कर प्यार, सच सच नाल रखाईआ। गुरू गुरू गुरू अधार, गुरदेव स्वामी इक्क दृढ़ाईआ। हरि गोबिन्द कलम ना सक्कया उठाल, हरिराए अंक ना जोड़ जुड़ाईआ। हरिकृष्न शब्दी सुरत ना सक्कया संभाल, राग नाद ना कोई जणाईआ। तेग बहादर उप्पर हो किरपाल, नानक निरगुण जोत कीती रुशनाईआ। उस ने शब्दी शब्द लिखे बण दलाल, मारू राग सिफ्त सालाहीआ। गोबिन्द वेख्या नाल खिआल, चौदां सौ तीस अंक फोल फुलाईआ। इक्क कन्ना बणौणा विच्च दलाल, जिस ने पंना पंना देणा उठाईआ। एका जोत दस देह गोबिन्द सची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। जिथ्थे वसे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। अमृत जाम दए प्याल, रस निझर इक्क वखाईआ। झगड़ा मेट के काल महांकाल, दर ठांडे दए वडयाईआ। हुक्म संदेशा मन्ने पुरख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। गोबिन्द तूं मेरा शब्दी सुत दुलारा लाल, लालन एका रंग रंगाईआ। तेरा लहणा लेखे लाउणा सन्तां भगतां बाल, बाल अवस्था आपणे लेखे पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करनी रुशनाईआ। संदेशा दे के दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप सुणाईआ।

नानक गोबिन्द निरगुण जोती, जोती जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल अंदर चढ़या चोटी, चोट अगम्मी शब्द लगाईआ। सुरती रही मूल ना सोती, आलस निंदरा दित्ती गवाईआ। इक्क सुणा के सच सलोकी, सोहला सतिनाम दृढ़ाईआ। जिस दी महिंमां विच्च गुरू ग्रंथ दी बण गई पोथी, रागाँ नादां नाल वडयाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणे प्रेम दा सदा मौज़ी, ठाकर हो के आपणी कार कमाईआ। आपणे शब्द दा आपे बण के खोजी, आपे आपणी करे सिफ्त सालाहीआ। जगत विकार दा रहे ना कोई रोगी, शब्द अणयाला तीर लगाईआ। जिस विच्च नाम भंडारा भरया रस भरया जगत रसीआ भोगी, भसमड़ आपणी कार कमाईआ। खेल खिलाया बण संजोगी वियोगी, करनी करता आपणा हुक्म वरताईआ। धार बदल के वेदी सोढ्ढी, सो सोहला इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

निरगुण जोत दस अवतार, अवतरी रूप वटाईआ। गुरू गुरू गुरदेव घर बाहर, काया माटी वज्जी वधाईआ। शब्द संदेशा दे अगम्म अपार, साढ्ढे तिन्न हत्थ बंक सुहाईआ। रसना जिह्वा गए उच्चार, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। भाई गुरदास बण लिखार, लेखा गिआ

वखाईआ। तत्त वजूद शिंगार, गुरू गुरदेव बेपरवाहीआ। नानक तों लै के गोबिन्द तक्क दस सरीर रहे ना विच्च संसार, वक्खरे वक्खरे आपणा रूप गए छुपाईआ। फेर किहनूं मन्नणा सिरजणहार, सिर हत्थ कवण रखाईआ। नानक अञ्जण अमर रामदास अरजन हरिगोबिन्द हरिराए हरिकृष्न तेग बहादर नानक दा रूप गोबिन्द देह हो गए खाकी शार, ख़ाक विच्च तन ख़ाक रूप बणाईआ। निशाना रिहा ना कोई विच्च संसार, जिस निशाने उत्ते दीन दुनी झट्ट, लँघाईआ। एसे कर के गुर गोबिन्द ने अन्त किहा उच्चार, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ। शब्द गुरू गुरू गुरू मन्नो अगम्म अपार, जो जन्म मरन विच्च कदे ना आईआ। उस शब्द नूं कहन्दे शब्द सार, जिस शब्द दी महिंमां गुरू अवतार अक्खरां विच्च सतरां विच्च लाइनां विच्च सिफ्तां विच्च सालाहीआ। तन वजूद दी जग्गा इक्क नूं करो निमस्कार, जो इक्क जोत इक्क रूप इक्क इकल्ला आदि जुगादि अखवाईआ। ओसे दा गुरू ग्रंथ करे इज़हार, ओसे दी शास्त्र सिमरत वेद करन पुकार, ओसे दा अञ्जील कुरान बाईबल विच्च कीता प्यार, प्रेमी प्रीतम प्यारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाईआ।

गोबिन्द शब्द धार किहा मैनूं मन्नयो शब्द ग्रंथ, ग्रंथ गुरदेव नज़री आईआ। ओस मंज़ल नूं केहड़ा समझे विच्चों पन्थ, पन्थक वाले आपणी विद्या विच्च करन पढ़ाईआ। जिस मंज़ल नूं लक्ख नहीं सके कोटन कोट पांधे पंडत, सो मंज़ल गोबिन्द गिआ जणाईआ। पंजां तत्तां वाला गुरू ना मन्नयो क्योंकि पुरख अकाल लए अवतार अन्त, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस ने तारने सारे भगत सन्त, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। उह आदि तों लै के अन्त तक्क गुर अवतारां पैगम्बरां दा धुर दा कन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस ने लक्ख चुरासी वेखणा जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। ओस दी महिंमा कोई जाण ना सके मुल्ला शेख़ मुसाइक पांधा पंडत, विद्या धार ना कोई दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

गुर गोबिन्द किहा गुर सतिगुर मन्नणा इक्को इष्ट, पुरख अकाल नज़री आईआ। गुरू ग्रंथ दी बाणी वाचण वाल्लयां खोल्हे अंदरों दृष्ट, दृष्टी दा दृष्ट कवण समझाईआ। जिथ्थे इशारा कीता राम तों वशिष्ट, विषयां तों बाहर दित्ता समझाईआ। जिथ्थे ना कोई स्वर्ग ना कोई बहिश्त, इक्को निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई अक्खरां वाली पढ़त लिखत, ना कोई लेखा कलम शाही कागज़ नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ।

गुर गोबिन्द किहा सच, सति सच दृढ़ाईआ। गुरू कदे ना बणे काया माटी कच्च, जो जम्मे ते मर जाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर जो हर हिरदे जाए रच, लूं लूं विच्च आपणा रंग रंगाईआ। सभ दी अंदरों बदल देवे मत, बुद्ध बिबेक दए वखाईआ। झगड़ा मुका के विकार तत्त, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत्त, तिन्न सौ

सड्ड हाडी दुःखां विच्च ना कोई भवाईआ। एसे कर के गुरू ग्रंथ दी गाथा दित्ती दस्स, दहि दिशा दित्ता समझाईआ। एस तों पढ़यां सुणयां मार्ग मिलदा जिथ्थे मिले पुरख समरथ, ओस मंज़ल चढ़ के गुरमुखो दर्शन लैणा पाईआ। जे ऐवें खाली टेकी जाओ मथ्थ, मथ्थे टेकयां हत्थ कुछ ना आईआ। जिनां चिर तुहाड्डे अंदर नानक गोबिन्द नाम ना जाए वस, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। ओन्हां चिर खुल्हे ना अंदरों अक्ख, निझ नेत्र ना होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दे के गिआ वर, गुरबाणी बिनां गुर शब्द बिनां गुर धार बिनां गुर प्यार बिनां पुरख अकाल नज़र किसे ना आईआ।

नानक किहा पढ़ पढ़ थक्का जगत, जगत विच्च दुहाईआ। बिनां प्रभू प्यार तों बणया कोई ना भगत, भगवन मिलण कोई ना आईआ। गुरू ग्रंथ दी बाणी सतिगुर दी धार शक्त, शख़शीअत सभ नूं दए वखाईआ। जो गोबिन्द ने लिखया पुरख अकाल ने आउणा जोती जामा पाउणा शब्दी धार उपजाउणा उसे दे कोल वक्त, बाकी समझ किसे ना आईआ। भावे किन्ने सन्त महातमा मुनीशर तपीश्र रिखीशर सूफी सन्त कड्डे कर लउ उत्ते धरत, धौल धवल दे मालक दा भेव सके ना कोई समझाईआ। जिस दा खेल फर्श अर्श, उह जाणे आपणी तर्हा तर्ज़, किस वेले आपणे हुक्म दे हुक्म नूं देवे वरज, किस वेले आपणा पिछला पूर करे फर्ज़, अगला मार्ग लए उपजाईआ। एस खेल दी उस गोबिन्द नूं गर्ज़, जेहड़ा दीन दुनी तों बाहर डेरा लाईआ। जिस ने गरीब निमाणयां वंडणा दर्द, दुखीआं होणा आप सहाईआ। शरअ छुरी मेटे करद, कतलगाह दा लेखा दए चुकाईआ।गोबिन्द ने पुरख अकाल अग्गे कीती अर्ज़, बेनन्ती कर के दित्ती सुणाईआ। तेरे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां दी फ़रद, लहणा देणा सभ दा देणा थाउँ थाईंआ। प्रभ नूं आपणा नाम बदलदिआं आपणा राज बदलदिआं आपणा समाज बदलदिआं कदे ना होवे कुछ हरज़, क्यों चुरासी दा मालक ख़लक दा ख़ालक आपणा हुक्म वरताईआ। उह वेखणहारा कलिजुग अन्धेरा गर्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक्क वखाईआ।

गोबिन्द किहा गुरू ग्रंथ मन्नणा इक्क, सिख्या गिआ समझाईआ। जे गुरू ग्रंथ मन्नोगे ते पुरख अकाल समझोगे इक्क, जो सभ दा पिता माईआ। जिस दे विच्च चार जुग दे शास्त्र रहे दिस, सिफ्तां वाले सिफ्ती ढोले गाईआ। एह वी मेरे नाम दा हिस, हिस्सा जगत विच्च रखाईआ। शब्द गुरू कदे ना देवे पिठ, पासा सके ना कोई मात बदलाईआ। जे लभ्भणा ते लभ्भणा विच्चों सवा गिठ, लंमा पन्ध ना कोई रखाईआ। नाले अगम्मी लिख के गिआ चिट, चिट्ठी धार नाल वडयाईआ। दुनियां पूजणे पत्थर इट्ट, ग्रंथां वड वडयाईआ। मैनूं उह मिले जेहड़ा मेरा पूरा होवे सिख, सिख्या सिक्खी विच्च रखाईआ। मेरे पुरख अकाल दीन दयाल ने वेख लैणा साडा भविख, जो भविख्तां विच्च उस दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक्क दरसाईआ।

गुरू ग्रंथ कहे मैं करदा सिफ्त सलाह, गुर दस दस वडयाईआ। मेरे विच्चों तक्कणा

ते लभ्भे इक्क मलाह, खेवट खेटा नज़री आईआ। जिस दा पुरख अकाला नां, नाउँ निरँकारा कर के सारे गाईआ। जो वसे हर घट थां, दो जहानां सोभा पाईआ। तिस दे बल बलहारी जां, जो जानशीन अवतार पैगम्बर गुर आपणे लए बदलाईआ। उस ने अगला जुग करना रवां, रवानगी सभ दे हत्थ फड़ाईआ। उह चौधवीं सदी दा अन्तम समां, वक्त सुहञ्जणा दए सुहाईआ। सभ ने वेखणा नाल चवां, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। बारां साल बाकी जिस ने बदलणी पवण हवा, आदम हवा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ।

गुरू ग्रंथ दी बाणी नाम निधान, कलिजुग करे रुशनाईआ। अगला हुक्म श्री भगवान, धुर फ़रमाणा इक्क दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैगम्बर गुर करन परवान, सिर सके ना कोई उठाईआ। दरगाह साची बैठे बाल अंञाण, आपणी आप ना लए कोई अंगढ़ाईआ। तेरा खेल नौजवान, मर्द मरदाने सोभा पाईआ। असीं चौहन्दे कलिजुग अन्त सभ दा बदल दे विधान, वाधा आपणा ना कोई घड़ाईआ। असीं सुणन वाले तेरा फ़रमाण, संदेशे कलमे नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाईआ।

अगला मार्ग हो गिआ त्यार ते भगतां अंदर गिआ लग्ग, लग्ग मातर दा लेखा रिहा ना राईआ। उह छड्ड गए पिछली रीती जग, जागरत जोत विच्च समाईआ। भुल्ल गिआ काअबे वाला हज्ज, मन्दर मसीत शिवदवाले मट्ठ ना अक्ख उठाईआ। इक्को नूर वेख सूरे सर्बग, सीस जगदीस दित्ता निवाईआ। दीन मज़्हब दी टप्प के हद्द, हदूद इक्को वेख वखाईआ। जिथ्थे शब्द अनादी वज्जे नद, अनरागी राग सुणाईआ। दीपक जोत रिहा जग, जोती जाता करे रुशनाईआ। अगम्मा डंक रिहा वज, तूं मेरा मैं तेरा रिहा समझाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी शब्दी धार दरस देवे रज्ज रज्ज, गृह मन्दर पड़दा आप उठाईआ। उह भगत सुहेले पिछली रीती गए तज, तज़करा भगतां दित्ता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

पुरख अकाल दा शब्दी समाज, समझ शब्द रिहा दृढ़ाईआ। सति धर्म दा सति रिवाज़, सति सच विच्चों प्रगटाईआ। एह करके धुर दा काज, करनी करता दए वखाईआ। तुहाढ्ढे साहमणे वेखो सारे गाउँदे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दा लहणा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। एसे धार नूं निरगुण निरगुण मार के गए आवाज़, अगम्म अगम्मड़ी आह सुणाईआ। सो देवणहारा दात, दाता दानी दया कमाईआ। जिस ने कलिजुग मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। एह प्रभू दा खेल तमाश, गोबिन्द सभ नूं दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति वखाए आपणी मण्डल रास, गोपी काहन आपणी खेल कराईआ।

सतिजुग दा सति वतीरा, वितकरा नज़र कोई ना आईआ। खेल खिलाए वड पीरन पीरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिस दा नूरे नज़र बेनज़ीरा, जगत नेत्र नैण अक्ख वेख ना कोई समझाईआ। रविदासे नूं गंगा दी धार दित्ता कसीरा, कुशल दा मालक किछ आपणा पड़दा लाहीआ। जन भगतां नाल जगत दा बदल देणा वरतीरा, वारता अगली इक्क समझाईआ। ना कोई खड़ग फड़े ना शमशीरा, चिल्ला तीर कमंद ना कोई उठाईआ। एका संदेश देवे शब्दी शब्द गुणी गहीरा गहर गम्भीर भेव चुकाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदिआं अंदरों बदल देवे खमीरा, बुद्ध बिबेक कराईआ। जेहड़ी आशा रक्ख के गिआ कबीरा, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी बाणी बोध शब्द गुर धार अक्खरां देवणहारा धीरा, धीरज धरवास धर्म दी धवुज दया कमाईआ। (२४ अस्सू शहनशाही सम्मत ५)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

आपणा कर्म आप कमा, गुर गोबिन्द वड वडयाईआ। अनन्द अनन्द गिआ समा, पूरी बणत बणाईआ। गढ़ केस डेरा ला, गढ़ी दए वडयाईआ। सीस धड़ लेखे ला, गुरमुखां खुशी मनाईआ। अन्तम लेखा दए चुका, भाणा आपणे हत्थ रखाईआ। आपणी भेटा आपे रिहा सुटा, सरसे विच्च टिकाईआ। गुरमुख साचे सन्त सुहेले सेवा ला, शब्दी शब्द समाईआ। आपे वेखे आपणा थां, जाए अठसठ धाईआ। कच्ची गढ़ी डेरा ला, पूरब लहणा भार चुकाईआ । चारे चार घर दए सहा, सुंञा कोई रहण ना पाईआ। आपे सुत्ता बेपरवाह, सूलां सत्थर हेठ विछाईआ। एका सुणावे साचा राह, तेरा राह तकाईआ। तेरा लहणा तेरी झोली दित्ता पा, तेरा तेरे विच्च टिकाईआ। दोवें हत्थ चारे कानीआं खाली रिहा वखा, पल्ले गंढु ना कोई बणाईआ । गुरसिखां गिआ एह समझा, वंड खाणा रीत चलाईआ। गुरू ग्रंथ लैणा मना, एका गुर बुझाईआ। घर घर दर दर एहदी कीमत ना देणी पा, एहदी मोख ना कोई चुकाईआ। एका मोख गिआ समझा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। कलिजुग जीव अन्तम भुल्लणा मेरा नाउँ, हट्टो हट्ट विकाईआ। करन आवां सच निआं, भुल्ल रहे ना राईआ। फड़ दाढ़ी दिआं हिला, जो मेरा अंग कटाईआ। दो जहानां ना देवा थां, जो रहे वणज कराईआ। विच्च विचोला कोई दिसे ना, ना विद्या कोई सिखाईआ। धुर दा गोला आप अखवा, गुरमुखां सेव कमाईआ। साचा तोला तोल तुला, एका तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दिता वर, होया मेला एका घर, एका दर सुहाईआ। (०७ ४६६ ४६७)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

❀ फेर संगत ने बेनन्ती कीती "श्री गुरू ग्रन्थ साहिब गुरू है" ❀

❀ शहनशाह जी ने रहमत कीती : ❀

पुरख अकाल खेल निरगुण निरवैर निराकार, धरत धवल धौल उत्ते आईआ। सनक सनंदन सनातन बण के सन्त कुमार, बराह आपणा वेस वटाईआ। यगह पुरुष हो त्यार, परदा परदिआं विच्चों चुकाईआ । हावगरीव खेल अपार, नर नरायण सर्ब समझाईआ। कपल मुन हो उजिआर, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। किथे इक्क दा दस्सणा लेखा नहीं उस दी आउणी फेर वार, वारता अगली आप जणाईआ। रिखव हो के ख़बरदार, प्रिथू आपणी गंढु पवाईआ। मतस हो के ज़ाहर, कछव वड्डी वडयाईआ। धनंतर खोल्ह किवाड़, बावन वेस वटाईआ। हरनाकश दिता शंघार, आपणी कल समझाईआ। धरू लगाया पार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। हँस चोग दित्ती खवाल, मानक मोती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हत्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण आया राम परस, राम दसरथ बेटा खेल खलाईआ। वेद व्यासे कर के तरस, लोकमात तन दित्ती वडयाईआ। कृष्न खेल कीता असचरज, नूर नुराना डगमगाईआ। योधा बण के सूरबीर मरदाना मरद, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क शनवाईआ।

निरगुण सरगुण धार शब्द, तन वज़ूद दए वडयाईआ। जिस ने बणाए दीन मज़हब, शरअ शरअ दित्ती तजाईआ। मूसा ते होया गज़ब, नूर नुराना कोहतूर दए गवाहीआ। ईसा दे अंदर रक्खया कदम, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ।

निरगुण किरपाहार दयाला, दीन दर्द दुःख भंजन अखवाईआ । जिस मुहम्मद कीता अलगमा, वही नाज़ल दित्ता कराईआ। ज़बराईल दए पैग़ामा, संदेशा धुरदरगाहीआ। सजदा करना कबूल सलामा, कदमबोसी विच्च सीस झुकाईआ। उस दा खेल बड़ा महाना, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जिस सतिगुर नानक भेजिआ दे के सतिनामा, बिनां देह तों सतिनाम टिकण किते ना पाईआ। उस सतिनाम ने अञ्जण कीआ परवाना, अमरदास वज्जी वधाईआ। रामदास होया प्रधाना, गुरू अरजन गुरू गुरदेव अखवाईआ। हरिगोबिन्द पहिर के बाणा, दीन दुनी रीती दित्ती बदलाईआ। हरिराए प्यार कीता महाना, हरिकृष्न वज्जी वधाईआ। गुर तेग बहादर धर्म दा बण निशाना, निशाना जगत जहान गिआ झुलाईआ। गोबिन्द खण्डा खड़ग खिच कृपाना, दुष्टां दिता घाईआ। उसे गोबिन्द दी धार शब्द शब्द गुरू ग्रन्थ जिस नूं सीस झुकाउण जिमी असमानां, विष्न ब्रह्मा शिव सारे झोलीआं डाहीआ। बिना देह तों परमात्मा दा निरगुण सरूप लोकमात कदे नहीं होया प्रधाना, प्रधानगी विच्च कदे ना आईआ। उह निरगुण दी महिंमा एह सिफ्तां दा ख़ज़ाना, नाम दा भंडारा बोध अगाध कागज़ां उत्ते कादर करते करीमां नूं रिहा मिलाईआ। एह कोई अक्खरां वाला पत्थरां वाला सिफ्तां वाला अकल बुद्धि दा नहीं अफ्साना, एह धुर संदेशा धुर पैग़ाम धुर दा हुक्म हुक्म इक्को नज़री आईआ। एह तत्त देह नहीं एहदा स्वास नहीं नौं दवार नहीं

पवन नहीं एह सतिगुर दा निराकार दा अकार गुरू ग्रन्थ साहिब महाना, जिस दे उत्ते सिफ्त सिफ्त सलाह, इक्को इक्क अकार, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस नूं सारे कहन्दे जगत मलाह, जिस दे विच्चों मिले हकीकत वाला हक़ खुदा, जिस दे अवतार पैगम्बर सारे करन दुआ, वास्ता बगलगीर हो के पाईआ। उस दा सतिगुर नानक बणया रहिनुमा, गुरू अरजन मोहर दित्ती लगा, शहादत शब्द गुरू भुगता, सन्त सुहेले भगत सारे नाल लए रला, वड्डा छोटा ऊँच नीच रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मेल आपणे हत्थ रखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ शब्द बोध गुरबाणी, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। जिस दी महिंमा अकथ्थ कहाणी, अकल बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। एह सतिगुर अरजन सभ नूं अमृत जाम प्याया पाणी, कोझयां कमलयां गरीबां निमाणयां अन्तर आत्म धुर दा रस चुआईआ। एह झगड़ा मुकावे चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज लेखा रहे ना राईआ। एहो मंज़ल चार जुग दे अवतारां ने पैगम्बरां ने दस्सी रुहानी, रूह बुत्त विच्च मिले मेल धुर दे माहीआ। जिस दी सदा तरल जवानी, बुड़ापे विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द शब्द गुरबाणी, बाण शब्द शब्द इक्को नज़री आईआ।

सतिगुर शब्द शब्द गुरू ग्रन्थ, गुरदेवा नज़री आईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्हब ना कोई अक्खरी अंस, मानव जाती एका गंढु पवाईआ। जो ठग्गाँ चोरां यारां बदमाशा बणावे गुरमुख हँस, बुद्धि बिबेक दए बणाईआ। जो हँकार निवारे कंस, निमरता निरमाणता इक्क समझाईआ। जो हिंदू मुसलम सिख ईसाईआं दा इक्ठा बणावे बंस, परिवार इक्को इक्क दृढ़ाईआ। जिस दी सभ तों वक्खरी बणत, घड़न भन्नणहार जिस दा मार्ग इक्क अखवाईआ। एसे दी महिंमा करदे सन्त, सिफ्तां विच्च सलाहीआ। एहदा लेखा आदि अन्त, जुग जुग रीष्ती चली आईआ। एहदा मेला नाल भगवन्त, भगवन मेला सैहज सुभाईआ। एह कदे ना होए भसमंत, भसमड़ रूप ना कोई दरसाईआ। इस दे विच्चों मिले बहिश्त जनत, जनत स्वर्ग इस दे चरन चुम्मे चाईं चाईंआ। गढ़ पुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। बोध अगाध मिले पंडत, घर बैठिआं सभ नूं करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रहबर इक्क अखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ शब्द गुरदेवा, देव आत्म मेल मिलाईआ। जिस दा भेव अलख अभेवा, अगोचर कहण कोई ना पाईआ। जिस नूं पढ़ना नाल रसना जेहवा, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। जिस दे नाल मिले धाम सचखण्ड दवार निहचल निहकवा, दरगाह साची सोभा पाईआ। एह अमृत रस मानव जाति दा अन्तर आत्म दा मेवा, रसना दे नौं रस कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा इक्क अखवाईआ।

वड्डा सतिगुर आप, आपणी दया कमाईआ। जिस दा चार जुग दा धुर दा जाप,

जगजीवण दाता आपणा नाम दृढ़ाईआ। जिस दी रचना रची निरगुण सरगुण नानक हो के आप, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। एह त्रैगुण दी धार त्रैगुण दा मेटे पाप, त्रैभवन दा मेला मेले सहज सुभाईआ। एहदे विच्च ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई दस्सया अन्धेरा डूंघा खात, गढ़े शरअ ना कोई बणाईआ। ना कोई झगड़ा रक्खया ज़ात पात, दीन दुनी ना कोई लड़ाईआ। इक्को साहिब दस्सया अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। सो पुरख निरञ्जण जिस दा कीती प्रकाश, हरि पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। एकँकार खेल खलाया तमाश, आदि निरञ्जण डगमगाईआ। श्री भगवान दित्ती दात, अबिनाशी करते दित्ती वरताईआ। पारब्रह्म खोल्ह के हाट, ब्रह्म वस्त अमोलक झोली दित्ती पाईआ। एह नानक दी धुर दी लिआंदी सुगात, सतिगुर नानक सतिगुरू पुरख अकाल दी सिफ्त सिफ्त सिफ्त विच्च वडयाईआ। जिस दा गोबिन्द बणया दास, पुरख अकाल कह के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा यार नूर अलाह अलाह आलमीन इक्को इक्क अखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ जगत सुहेला, हिंदू मुसलम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी आपणे अंग लगाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म कराए मेला, परदा दूई द्वैत उठाईआ। इके घर वखाए गुरू गुर चेला, काया मन्दर अंदर वज्जे वधाईआ। घर स्वामी सज्जण मिले उह अगम्मी सुहेला, जिस दा विछोड़ा एथ्थे ओथ्थे होण कदे ना पाईआ। जिस दी धार सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर अचरज खेला, ख़ालक ख़लक ख़लक ख़ालक विच्च गिआ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

गुरू ग्रन्थ सतिगुरू सतिगुरू दा पद, पदवी धुरदरगाहीआ। जिथ्थे दीन मज़्हब ज़ात पात अवतार पैगम्बर गुरू दी नहीं कोई हद्द, तन वज़ूद माटी ख़ाक पुतला नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे इक्को जोत दीपक रिहा जग, नूर नुराना डगमगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उथे कोई ना सके लभ्भ, दूर दुराडे थल्ले बैठे नैण उठाईआ। सतिगुर नानक ओथ्थे चढ़या भज्ज, निरगुण धार वेख्या परम पुरख दा नूर चाईं चाईंआ। ओथ्थों वस्त लिआंदी दुरलभ्भ, आपणी सति वाली झोली पाईआ। फेर आया लोकमात वस्त लै के हक़, हमसाजण आपणा नाल रखाईआ। ओस नूं उस दे प्यार विच, ओस दी धार विच, संसार विच, गाया नाल रसना जिह्वा लब, धुर दा राग धुन आत्मक विच्चों खुशीआं नाल बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा रूप सूरा सर्बग्ग, पुरख अकाला इक्को नज़री आईआ। जिस नूं पैगम्बरां किहा यामबीन अलाही रब्ब, नूरी रब्ब नूर अलाहीआ। ओसे दा नाम, ओसे दा कलमा, ओसे दा शब्द, ओसे दा नाद, ओसे दी धुन, ओसे दी सद, ओसे दा ढोला गाईआ। जो ऐस वेले सारी सृष्टी दे साहमणे प्रगट ते उहदा मालक प्रगट अज्ज, जिस नूं आज़ज़ हो के सारे सीस निवाईआ। एस दा पर्दा परदिआं विच्च सके कोई ना कज्ज, उहलिआं विच्च ना कोई छुपाईआ। जिस दे पिच्छे गोबिन्द ने वाहिगुरू जी दा खालसा ते वाहिगुरू जी दी फतह दा जैकारा लाया गज्ज, जिस गज़ दे तन्दव दित्ते तुड़ाईआ। उह सारी सृष्टी

दा दृष्टी दा आत्मा दा ब्रह्म दा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के कबूल करन वाला हज्ज़, हाज़त अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

गुरू ग्रन्थ साहिब गुरबाणी आदि पुरख अपरम्पर, पारब्रह्म वडयाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी हुंदा रिहा सवंबर, निरगुण सरगुण तत्तां वाले तत्त लए प्रनाईआ। जिस ने आपणी नाम बाणी दा अवतार पैगम्बर गुरू दी धार विच्चों कीता अडम्बर, लेखा लिखत लिखत नाल बणाईआ। उह सर्ब कला भरतंबर, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ। उस दा काया रूपी सच सच दा मन्दर, जिस मन्दर अंदर वसे धुर दा माहीआ। भाग लगाए डूंघी कंदर, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी जंदर, पर्दा दूई वाला चुकाईआ। प्रकाश कर के बिनां सूर्या चन्दर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच शब्द शब्द गुर दात, सतिगुर नानक निरगुण धार सरगुण लिआंदी लोकमात, धरनी धरत धवल धौल उत्ते मानस मानस मानव सभ दी झोली दित्ती भराईआ। एसे दा रूप परमेश्वर कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म हुक्म फ़रमान, आदि जुगादी देवे जगत जहान, ब्रह्म वेता आत्म नेता नर निरँकार निराकार आपणी दया कमाईआ।

(२३—१६१ १६४)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

नारद कहे खेल तक्क इक्क एकँकारी, अकल कलधारी रिहा जणाईआ। नेत्र तक्क शब्द लिखारी, पंज पंज पंज नाल वडयाईआ। ग्रन्थ तक्क जिहनूं झुकणी सृष्टी सारी, सार शब्द नाल चतुराईआ। उह हाज़र होणे भगत दवार वड दरबारी, दर दरबारे सोभा पाईआ। फेर खेल वरते अपर अपारी, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। सदी चौधवीं अग्गे कला वरतणी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कोई रूप नहीं मर्द नारी, नारी पुरुष ना वंड वंडाईआ। आदि जुगादि जुगादि आदि दा इक्क निराकारी, निरवैर नूर इल्लाहीआ। जिस ने सतिजुग दी सति करनी उसारी, नींह सच वाली रखवाईआ। जन भगतां दी लेखे लाए सेवा भारी, भारदवाज रिखी दा लेखा दए चुकाईआ। जिस नूं सभ ने करनी निमस्कारी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नारद कहे मेरा रूप होवे सवा हत्थ लंमी बोदी सुट्टी होवे पिच्छाड़ी, त्रिसूल त्रै धार मथ्थे उत्ते बणाईआ। सदी चौधवी दी गोली बुलां उत्ते लाली लाई होवे गाड़ी, गढ़ गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी धार करे प्यारी, प्यार मुहब्बत सच रूप दरसाईआ। (२२—९७९)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

हरि मन्दर हरि दवार हरि साचा ताल सुहाया। निरगुण जोती कर उजिआर, गुर अरजन वेख वखाया। अठ्ठे पहिर रंग करतार, अन्ध अन्धेर दिस ना आया। दिवस रैण शब्द धुनकार, धुन अनादी रिहा वजाया। चरन कँवल हरि कर प्यार, गुर नानक नज़री आया। नानक बोले कर प्यार, अरजन वेख वखाया। आए दान धुर फ़रमाण, लेखा एह समझाया। चिट्टे उत्ते लिख काला निशान, ना कोई सके मेट मिटाया। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, भेख पखण्ड रहण ना पाया। गुर का ज्ञान ना कोई वेचे विच्च दुकान, ना हट्टो हट्ट फिराया। दो जहान कीमत कोई ना सके चुकान, ना कोई मुल्ल पवाया। धुर दी बाणी धुर दी बाण, धुर करता रिहा लिखवाया। अकाल पुरख होया मेहरवान, गुर अरजन सेवा लाया। शब्द गुर आया विच्च मैदान, आपणा पड़दा लाहिआ। गुरमुख विरला करे ध्यान, जिस जन बूझ बुझाया। जगत ज्ञान ना सके पछान, पढ़ पढ़ वादि वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अरजन दिता एका वर, एका गुर वखाया।

एका गुर इक्क ग्रंथ, एका रूप दरसाइंदा। एका सिख एका सिख्या एका पन्थ, एका मार्ग लाइंदा। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या ना कोई रहे अन्त, असथिल कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर जणाई लोकमात वज्जे वधाई धाम सुहाए इक्क अनडीठिआ।

गुरू ग्रंथ शब्द चोट, एका तन लगाईआ। मनमुखां कढ्ढे काया खोट, जो जन हिरदे रिहा दिसाईआ। ग्रन्थी पन्थी माया भरे ना कोई पोट, ना कोई विश्टा वढ्ढी लै लै खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा शब्द धर, शब्द गुर रिहा सलाहीआ।

शब्द गुर गुर दीनां, शब्दी लेख लिखवाया। शब्दी शब्द शब्द रस भीन्ना, शब्दी रंग चढ़ाया। शब्द जल शब्द मीना, शब्द शब्द विच्च समाया। शब्द बंने लोक तीनां, अकाश प्रकाश शब्द टिकाया। शब्द दाना शब्द बीना, दाना बीना शब्द अखवाया। शब्द खाणा शब्द पीणा, शब्द तृस्ना तृप्त कराया। शब्द मरना शब्द जीणा, शब्द शब्द लए उपाया। शब्द जोधा शब्द परबीना, शब्द डंक वजाया। शब्द पंचम नीचो नीच शब्द हीणा, शब्द निउँ निउँ सीस झुकाया। शब्द राज शब्द राजाना, शब्द शाह सुल्तान अखवाया। शब्द काज शब्द साज, शब्द बंध बंधाया। शब्द सीस शब्द ताज, शब्द रिहा टिकाया। शब्द मंत्री शब्द जोग राज, शब्द रयीअत रिहा अखवाया। शब्द रक्खे जगत सांझ, शब्द नाता दए तुड़ाया। शब्द गुर आए लोकमात भाज, शब्द गुर रूप वटाया। शब्द गुर रक्खे लाज, शब्द गुर होए सहाया। नानक सुणाए नौं खण्ड पृथ्मी इक्क अवाज़, गुर अरजन लेख लिखवाया। गुर अरजन मारे इक्क अवाज़, हरि मन्दर दए सुहाया। हरि जू सवारे आपणा काज, गुर अरजन एह समझाया। कलिजुग अन्तम आवे भाज, जोती जामा भेख वटाया। भाग लगाए देस माझ, छे योजन वंड वंडाया। छे शास्त्र खोल्हे पाज , चार वेद फोल फोलाया। कलिजुग रावण गढ़ हँकारी तोड़े जगत समाज, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। सज्जा चरन छुहाए दिल्ली दिलीज, आर पार आप हो जाया। गुरू ग्रन्थ उप्पर बाणी कलिजुग जीवां

इक्क नक़ाब, पड़दा इक्क रखवाया। अकाल तख्त अकाल मूरत निरगुण सुणाए ना कोई अवाज़, ढड्ड सारिंगे रहे वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अरजन वेखे तेरा दर, हरि मन्दर सोहे साचा घर, गुरू ग्रंथ मिले वर, भेव चुकाए नारी नर, हरि साचा ढाडी दो जहानी बणे गाडी, दूई द्वैती जाए वाडी, एका दर रखवाया।

(०७—४६३ ४६४)

गोबिन्द सेज कहे मेरा रूप घास फूस, मैं फूलन दिते तजाईआ। असीं तिनका तिनका बण गए ताणा पेटा सूत, स्वच्छ सरूपी आपणा रूप बदलाईआ। साडे उत्ते सुत्ता पुरख अकाल दा सुत, दुलारा इक्को नज़री आईआ। साडे गृह मौली रुत्त, रुत्तड़ी इक्क महकाईआ। असां हुण नहीं होणा चुप्प, वास्ता देणा पाईआ। क्यों साड्डे उत्ते होया खुश, यारड़ा आपणे नाल मिलाईआ। किधरों बदल के आ गिआ रुख़, बण के पान्धी राहीआ। तेरे अंदर नहीं कोई दुःख, दुःख दर्द ना कोई जणाईआ। सेज कहे मैं फेर वेख्या उस ने ता दिता मुच्छ, हस्स के किहा मुशकल तुहाड्डी दूर कराईआ। जिस वेले मैं छड्ड के आवां काया बुत्त, बुत्तखान्नयां डेरा ढाहीआ। नाल लै के आउणा अबिनाशी अचुत, चेतन्न आपणी धार वखाईआ। तुहानूं गोदी लवां चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। सचखण्ड दवारे देवां सुट्ठ, दरगाह साची आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

सेज कहे मेरे अंदर निक्के वड्डे कंडे, आपणा मुख भवाईआ। तिखी धार दिसदे दन्दे, अग्गे हो ना कदे बदलाईआ। सारे कहण साड्डे भाग चंगे, साड्डे उत्ते सुत्ता धुर दा माहीआ। जिस दे खून नाल असां जाणा रंगे, रंग अगम्मड़ा दए चढ़ाईआ। सानूं लै जाणा ओस डण्डे, पतन आपणे लए बहाईआ। जिथ्थे लेखे लगदे मंदे, पतितां होए सहाईआ। साड्डे नैण रहण ना अन्धे, गोबिन्द तक्कीए चाईं चाईंआ। सानूं प्रकाश भुल्ल गए सूर्या चन्दे, नूर नुराना सोभा पाईआ। असीं उह मंज़ल लँघे, जिस नूं पड़न सुणन वाला पार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ।

सेज कहे मैं बेनन्ती कीती इक्क, निमरता विच्च सुणाईआ। गोबिन्द कुछ लेखा दे लिख, हिस्सा साड्डे नाल पाईआ। कौण अंदर वड़िआ तेरे विच, जो सानूं करे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा मेरा पित, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। जो साचा करे हित, नित नवित्त दया कमाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कित, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ ध्यान लगाईआ। उह किसे ना पए दिस, पूजा वाले रहे कुरलाईआ। उह कमलीए सेजा, जे सतिगुर साख्यात मिल जाए उह सभ लहणे देणे दए नजिठ, मेहर निगाह इक्क उठाईआ। मैं तुहाड्डे उत्ते इक्को गिआ लिट, एस दे बदले

तुहानूं सचखण्ड दिआं पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला आप कराईआ।

सेज कहे तेरा नाम चंगा कि दरस, सच दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं मिल के मिटदी हरस, हवस रहे ना राईआ। मैं जिस उत्ते चाहवां कर देवां तरस, पापीआं पार कराईआ। नाम जपण वाले पता नहीं किन्ना चिर रहणगे तड़प, सतिगुर नज़र कदे ना आईआ। नाम जपण वाले वेखदे रहिंदे वक्त, दरस करन वाले दरस कर के आपणा आप पार कराईआ। एहो नाम दा ते मेरे मिलण दा फरक, फिकरे इक्को विच्च समझाईआ। साख्यात सतिगुरू छिन्न विच्च चढ़ा दए फर्श दे उतों अर्श, अर्श तों फर्श एह मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वाहवा आपणा संग बणाईआ।

सेज किहा गोबिन्द की चंगा तैनूं गाउणा, सिफ्तां राग अलाईआ। कि चंगा दर्शन पाउणा, निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा मैं ओस नूं अंग लगाउणा, जिस दा मेला नाल धुरदरगाहीआ। जिन्हां नूं अजे विछोड़े विच्च रखाउणा, उन्हां नूं नाम भगती विच्च लगाईआ। किसे नूं वेद पुरान शास्त्र, किसे नूं अञ्जील कुरान कलमे, किसे नूं गीता ज्ञान, किसे नूं गुरू ग्रंथ पढ़ाउणा, भगतां गुरमुखां नूं अंदर वड़ के आपणा दरस वखाईआ। कागज़ कलम शाही वाला लेख नहीं हत्थ फड़ाउणा, फड़ बाहों पार कराउणा, मंज़ल साची आप चढ़ाउणा, सचखण्ड दवार वसौणा, जिथ्थे मेरा जोत नूर डगमगाईआ। सच पुछें सेजा, मेरे तों बाद फेर पुरख अकाल आउणा, तत्ता वाला गुरू नहीं किसे मनाउणा, जिस ने शब्द गुरू उपजाउणा, चार जुग दिआं भगतां आप उठाउणा, साचा मार्ग इक्क दरसाउणा, बिनां भगती तों भगवन आपे पार कराईआ। गोबिन्द ने किहा मैं आपणे गुरसिख नूं किसे मकतब विच्च पढ़ने नहीं पाउणा, विद्यारथीआं वाला रूप नहीं दरसाउणा, उ अ इ स ह वाला टब्बर नहीं कोई बणाउणा, अलफ ये पे वाला लेखा नहीं कोई लिखाउणा, कलम शाही नाल पट्टी वाला पटा नहीं कोई दृढ़ाउणा, जिस वल मेहर कीती उस नूं पार कराउणा, एह गोबिन्द दी बेपरवाहीआ। मेरे पिच्छों किसे पढ़ना ते किसे सुनाउणा, किसे हस्सणा ते किसे गाउणा, सच पुछें गोबिन्द हत्थ किसे नहीं आउणा, माछूवाड़े दी सेज दए गवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त मेरयां सिखां मैनूं भुल्ल के मातलोक विच्च पछताउणा, पशचाताप विच्च हाहाकार होए थाउँ थाईंआ। गोबिन्द किहा अन्त अखीर पूरे पन्थ विच्चों इक्क सौ यारां सिखां ने गुरू ग्रंथ दा भेव पाउणा, बाकी समझ किसे ना आईआ। ऐवें जम्मे ते जम्म के मरे चुरासी विच्च भवाउणा, चारे खाणी उत्भुज सेतज अंडज जेरज वंड वंडाईआ। गुरू ग्रंथ नूं मन्नणा ते पुरख अकाल नूं मनाउणा, एह गोबिन्द गिआ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण नूर जोत जोत चमकाउणा, । (२२-६७) (२४ अस्सू शै सं ५)

.....अष्टभुज कहे तेरे ग्रंथ तक्के भगत दवारे, भगवन रूप नज़री आईआ। जेहड़े सभ नूं देण इशारे, ऐशो इशर्त तजणा कूड़ लोकाईआ। सभ दी नईआ आई अन्त किनारे, नौका तक्को थाउँ थाईंआ। अवतार पैगम्बर गुरू लेखा दिउ सारे, सार शब्द हुक्म जणाईआ। आपणे नेत्र नैण लउ उघाड़े, अक्ख प्रतक्ख रूप दरसाईआ। धर्म दी धार आउणी विच्च अखाड़े, सच दवारे सोभा पाईआ। दिवस तक्को सतारां हाढ़े, हाढ़ा कढ़ु के इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ।

ग्रंथ कहण असीं आ गए विच्च मैदान, मदन मोहण मानव दिती माण वडयाईआ। चार जुग दा झगड़ा मेटणा जो शरअ कीता विच्च दरमयान, दर दर आपणा हुक्म वरताईआ। साड्डी समझ कर सके ना कोई इन्सान, बुद्धि विच्च ना कोई चतुराईआ। अवतार पैगम्बर गुरू दिता ना किसे ज्ञान, मेहरवान हो के आपणी दया कमाईआ। सारे सिफ्तां वाले गा के गाण, ढोले रागाँ नादां विच्च कर शनवाईआ। हुण खेल श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। तीर अणयाला वज्जे बाण, बाण अणयाला आप चलाईआ। हुक्म कीता सूरबीर बलवान बलधारी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

ग्रंथ कहण असीं जुड़ गए अक्खर अक्खर, अक्खरां नाल मिल के वज्जी वधाईआ। जन भगतो पूजा करनी नहीं किसे इट्ट पत्थर, पाहन सीस ना किसे निवाईआ। एह उह लेखा जेहड़ा गोबिन्द लिखाइआ सी आपणे प्रेम पत्र, पत्रका समझ किसे ना आईआ। नौ वार रोज़ छिड़कदा सी अतर, अतर धुर दा नाम चढ़ाईआ। आपणे चोले दी कट के कतर, कतरा कतरा उत्ते रखाईआ। जन भगत हीरे बणा के रतन, देंदा रिहा माण वडयाईआ। पर जिस वेले सरसे दे पहुचँया पत्तन, घाट कन्ढी डेरा लाईआ। आपणा लेखा दस दस्मेश जलधारा विच्च लग्गा रक्खण, रखणा खण्डे नाल बणाईआ। नाले इशारा कीता काहना आजा जो खांदा रिहा मक्खण, बंसरीआं धुन सुणाईआ। आह वेख मैं जाणा एका वार ओस प्रभू दे वतन, जो बेवतना लए मिलाईआ। फेर तक्क जन भगतां आवां रक्खण, रक्खक हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

ग्रंथ कहण गोबिन्द ने डोबे सी गिणती दे बाई, दूआ दूए नाल मिलाईआ। फेर दोवें उठा के बाहीं, बाबल अग्गे सीस निवाईआ। मैं उह काहन नहीं बणना जेहड़ा चरवाहा बणे गाईं, गऊआं पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। मैं उह राम नहीं बणना जेहड़ा जंगल बेले भज्जे वाहो दाही, रसत्तयां विच्च आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं उह पैगम्बर नहीं मन्नणा, जेहड़ा शरअ दी करे तबाही, तबा कूड़ वाली बणाईआ। उह गुरू नहीं मन्नणा जिस नूं जनणी कुक्ख दए जाई, माता आपणी कुक्ख उठाईआ। मैं उह पुरख अकाल नहीं मन्नणा, जेहड़ा सदा दा बणे ना गुसाईं, सदा ना संग निभाईआ। मैं उह नाम नहीं मन्नणा,

जेहड़ा गुरमुखां दी कट्टे ना फाही, फांसी गलों ना दए कटाईआ। मैं उह दाम नहीं मन्नणा, जहेड़ा दमा दी दए ना गवाही, दामनगीर ना संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ।

जिस वेले गोबिन्द ने ग्रंथ सरसे विच्च डोबे, नक्क फड़ के डुबकी आपणी लई लगाईआ। फेर मूधे मार के गोढ्ढे, हत्थ छाती उते डाहीआ। एह हो गए तेरे जोगे, तेरी झोली पाईआ। हत्थ लै आपणे बोझे, बोझल भार ना कोई बणाईआ। नाले किहा नाल रोहबे, गुस्से विच्च सुणाईआ। मेरे प्रभू मैं कोई फिरना नहीं विच्च टोइआं टोबे, डुबकीआं लै ना झट्ट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

सरसा कहे जिस वेले बाई ग्रंथ मेरे पुज गए विच्च तहि, तहिखाना नानक दिता बणाईआ। गोबिन्द दोवें हत्थ सिर ते रक्ख के गिआ बह, आसण टेडी धार लगाईआ। नाले हस्स के किहा आदि अन्त तूही हैं, दूजा नज़र कोई ना आईआ। तेरी शक्ती शक्त शवै, नूर जोत रुशनाईआ। मेरे ग्रंथ ओ पुरख अकाले तैनूं कीते बैअ, दूजा हक़ ना कोई रखाईआ। जिस विच्च तूं सभ कुछ करना लैअ, लाईन इक्को देणी बणाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू सारे तेरी चरनी जाणे ढह, ढईआ मेरा दए गवाहीआ। मैं खाली हत्थीं जाणा मेरे हत्थ विच्च होणी कोई नहीं शै, माछूवाड़ा मेरा धाम सुहाईआ। मैं इक्को सरसे दी जगह तेरे प्रेम दी वगदी वेखणी नै, नईआ दूसर नज़र कोई ना आईआ। मैं नहीं जाणना तूं मालक त्रैलोकी कि त्रैअ, तिन्नां गुणां तों बाहर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ।

सरसा कहे गोबिन्द ने खण्डे नाल नौं मारीआं चारों कुण्ट लकीरां, आपणी खुशी नाल लगाईआ। फेर आपणे चोले दीआं कर के लीरां लीरां, लीरां दितीआं कराईआ। फेर आपणे सीस तों लाह के चीरा, पुठ्ठा दित्ता लटकाईआ। फेर उंगली तों चट्ट के हीरा, हीरे गुरमुख दित्ते वखाईआ। फेर आखिआ भज्ज के आ कबीरा, कबरां तों बाहर दिआं जणाईआ। आह वेख लै मैं उच्च दा पीरा, पीर पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। उह वेख मेरी उंगली नाल रविदास दा कसीरा, जो कस के लिआ बंधाईआ। उह वेख मेरा कमान तो तीरा, तुरीआ तों परे दृढ़ाईआ। मैं कोई गोबिन्द डाह के बहिण वाला नहीं पीड़ा, मुख घुंगट ना कोई रखाईआ। जद आवांगा दो जहानां चुकांगा बीड़ा, आपणा बल प्रगटाईआ। गुरमुखां दा राह रहण देणा नहीं भीड़ा, भीड़ी गली विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मैं इक्ठे कीते जट्ट नाईं छींबे झीरा, झीवर हो के गुरमुखां अमृत प्यावां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सरसा कहे गोबिन्द ने कन्न फड़ के मेरे अंदर मारी झाकी, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। इक्क ख़बर अगम्मी आखी, बिन अक्खरां दित्ती सुणाईआ। हाज़र हो जा मेरे

कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा पन्ध मुकाईआ। आह तक्क लै पोह दी ठंडी राती, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। जिथ्थे मेरे ग्रंथ जिथ्थे मेरा पन्थ उथे ना कोई दीवा ना कोई बाती, बिनां तेरी जोत तों नूर नज़र कोई ना आईआ। जिंनां चिर मैं शब्द रूप हो के ना आवां तैनूं करनी पऊगी राखी, राखिआ आखा मन्न के फिर मैनूं हुक्म लैणा मनाईआ। मैं तेरा लाडला सुत जे खुशी विच्च कर लवां गुस्ताख़ी, फेर वी घुट्ट के गले लैणा लगाईआ। पर याद रक्खणा तेरे शब्द दी तेरे शब्द गोबिन्द बिना करे कोई ना कापी, नकल मारन वाला नज़र कोई ना आईआ। पुरख अकाल हस्स के किहा नाले कन्नां ते मारी थापी, थपक के दित्ता सुणाईआ। गोबिन्द एह तेरे ग्रंथ मेरे शब्द दा पन्थ जिस वेले प्रगट होया बिनां भजन तों तार देवांगा पापी, पतित पुनीत बणाईआ। मंज़ल चाढ़ देवां घाटी, घाटा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म इक्क मनाईआ।

सरसा कहे गोबिन्द ने मेरे उत्ते ला दिता पंजां, पंजे उंगलां फेर आपणे मुख विच्च पाईआ। जेहड़ा हुक्म हुक्म लिख सके नहीं मेरे कवी धार बवंजा, बावन रंग रंगाईआ। मेरे साहिब ने मेरे नाल मिल के करना चंगा, चंगी तरां दृढ़ाईआ। अज्ज ओए सरसिआं मैं भज्जा जांदा छड्ड के पुरी अनन्दा, अनन्द जगत वाला तजाईआ। एह ढहिणे कोठे कंधा, महल्ल नज़र कोई ना आईआ। मैं गोबिन्द बणया तेरा नज़री आवां पंजां तत्तां वाला बन्दा, बंधन जगत वाले रखाईआ। अग्गे खेल करां अचंभा, अचरज कार कमाईआ। आपणा रूप सरूप किसे ना दस्सां चौड़ा लंमां, मिणती सके ना कोई कराईआ। ना धोती पहना ना तंबा, कछिहरा कच्छ ना संग रखाईआ। ना वेस वटावां ना केस रखावां ना रंग रंगावां कंघा, कंगण तन ना कोई चतुराईआ। इक्को होवां तेरा रूप होवां सूरा सर्बंगा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। इक्को शब्द होवां इक्को होवां मरदंगा, इक्को करां शनवाईआ। इक्को सेज होए पलंघा, आसण इक्क सुहाईआ। इक्को नाम होवे इक्को होवे खण्डा, ब्रह्मण्डां हुक्म वरताईआ। इक्को मंज़ल होवे इक्को होवे कन्ढा, कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

सरसा कहे गोबिन्द ने मेरी निक्की जिही बणाई क्यारी, कदम ढाई पुठ्ठे पैरीं चल के दिती जणाईआ। फेर दो हत्थां दी बणा के खारी, सीस आपणे उत्ते टिकाईआ। फेर बण गिआ जगत दा जवारी, सच झूठ दीआं गोहटां हत्थ टिकाईआ। फेर दोहां नूं मारे वारो वारी, इक्क दूजी उत्ते छुहाईआ। फेर तक्कया मेरा नूर जोत निरँकारी, निरवैर इक्क इल्लाहीआ। जिस ने मेरी सांभ के रक्खणी पटारी, पटने वाला रिहा दृढ़ाईआ। जेहड़ा आदि तों वड्डा भण्डारी, भंडारे विष्नूं रिहा दृढ़ाईआ। मेरा खेल होणा अपारी, अपरम्पर रिहा दृढ़ाईआ। मेरे लेख नूं आपणे देस विच्च लै जाए इक्क वारी, वारस हो के आपणी दया कमाईआ। फेर बण शाह सिकदारी, निरवैर हो के रूप बदलाईआ। नाद शब्द धुन कर धुनकारी, संदेशा देवे थाउँ थाईंआ। झट्ट शब्द अगम्मी रमज़ इक्क मारी, मारू राग तों बिनां दित्ती दृढ़ाईआ। ओ गोबिन्द तेरे ग्रंथ पन्थ दा इक्को पाहरू, पहिरा दे के आपणा

खेल खिलाईआ। याद कर लै जिस वेले आवे तेरयां गुरमखां भगतां पार उतारू, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच नाल मिलाईआ।

ग्रंथ कहण जिस वेले गोबिन्द पाणी दे विच्च रक्खया, सैहज नाल टिकाईआ। असां प्यार विच्च टेकिआ मथ्थया, मस्तक सीस झुकाईआ। गोबिन्द पिच्छे ताली मार के हस्सया, पिच्छेतों पिच्छा दित्ता जणाईआ। उह तक्को आदि वस्सया, अन्त उहो होए सहाईआ। कलिजुग होवे अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। बिनां कदमां तों आवे नस्सया, बण के धुर दा माहीआ। नाले खुशीआं दे विच्च नच्चया, कदम कदम नाल बदलाईआ। मेरा वाहिदा कौल पूरा होण लग्गया सच्चया, पुरी अनन्द दित्ता तजाईआ। नाले तूं मेरा मैं तेरा ढोला जपिआ, सोहँ राग सुणाईआ। नाले हस्स के किहा वाहिगुरू तेरी रक्खया, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। नाले घुट्ट के कमर कसिआ, सूरबीर लई अंगढ़ाईआ। सच पुछो गोबिन्द इक्को कदम नाल सरसे नूं टप्पआ, दूजा कदम ना विच्च टिकाईआ। अग्गे प्रकाश तक्कया लट्ट लट्टया, नूर जोत रुशनाईआ। गोबिन्द ने पुठ्ठा सीस चरनां ते सुट्टआ, सुट्ठ के दित्ता वखाईआ। पुरख अकाल चुक्क के आपणे पट्टया, पटने वाला छाती ते लिआ टिकाईआ। वाह मेरे बच्चया, बचपन तेरा मोहे भाईआ। उह वेख तेरा टुट्ट जाणां भाण्डा शरीर कच्चया, तन वजूद रहण ना पाईआ। औह वेख तेरा नंदेड़ अंगीठा मच्चया, जिथ्थे नानक निशाना गिआ टिकाईआ। औह वेख तैनूं झुकदे कोटन रव सस्सआ, डण्डावत कर के खुशी बणाईआ। उह वेख सचखण्ड दवारा तेरी करे कथिआ, कथनी राग अलाहीआ। उह खेड़ा तक्क बण गिआ रूप स्र्मथया, दूजा नज़र कोई ना आईआ। फेर नीचे वेख कलिजुग अन्धेरी मस्सआ, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। खिआल कर सस्से उत्ते होड़ा होड़े नाल मिल्या सस्सआ, सो आपणा रूप वखाईआ । हँ ब्रह्म अन्धेरे विच्च छपिआ, गोबिन्द चन्न चन्ना तेरे बिना करे ना कोई रुशनाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू तेरा मेरा कौल इकरार पक्कया, पारब्रह्म गंढु पक्की लैणी बंनाईआ। फेर जोत धार विच्च नस्सया, भज्जया वाहो दाहीआ। फिर खिड़ खिड़ा के हस्सया, बिनां मुख दन्द तों आपणा राग अलाईआ। अबिनाशी करते इशारा कीता रतिआ, सैनत दिती लगाईआ। गोबिन्द आह वेख दोहां दा धाम नयारा, जिथ्थे खेल होणा अपारा, पूरन ते पूरन दा सोहे पॅपिआ, पतिपरमेश्वर तेरा मेरा रूप इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा तूं सरसे विच्च मेरे सहारे रक्खया, सो सांभ के रक्खां चाईं चाईंआ। पर इक्क गल्ल याद कर लै जिस वेले तेरा ढईआ टप्पिआ, इन्नां ग्रंथां दे टप्पे मैं देणे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा वर हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गोबिन्द किहा मेरे पुरख अकाल स्वामी, साहिब तेरी सरनाईआ । आदि अन्त दे अन्तरजामी, आदि अन्त तेरे हत्थ वडयाईआ। मैं तैनूं इक्को वार करां सलामी, सलामां लैण वाल्या तेरे अग्गे सीस झुकाईआ । पर मैथों होणी नहीं किसे दी गुलामी, चाकर हो ना सेव कमाईआ। मैं शरअ छड्ड देणी तमामी, पिछले ज़ंजीर गल ना कोई पवाईआ। जदो

जावांगा तेरा नाता सभ दा जोड़ांगा बाहमी, ब्रह्म नूर ब्रह्म दिआं जणाईआ। जेहड़ा लेख लिखया तमामी, तरा तरा दिआं समझाईआ। इक्क खेल करां तेरयां भगतां नूं खड़ा करां तेरयां गुरमुखां दी निशानी, निशाना नाम तीर देणा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरे सिख बणा दिआं भगत, एह मेरी बेपरवाहीआ। सिर्फ तेरे उत्ते किरपा करां फकत, फिकरा तेरा आपणे नाल बदाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं दा आया वक्त, सम्मत शहनशाही सत्त नाल वडयाईआ। प्रगट होवां विच्च जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरसिख बणा के जिगरे लखत, लेखा सभ दा दिआं बणाईआ। पर इक्क गल्ल याद करलै अवतारां पैगम्बरां गुरूआं वास्तो मेरा हुक्म होवे सख्त, सखीआं वाला काहन बचया रहण कोई ना पाईआ। मैं शरअ दी गुंजाइश रहण नहीं देणी बचत, बच्चू बणा के सारे देणे समझाईआ। मेरे कोल चल के आवे कोई ना वफद, आपणा मता पकाईआ। याद कर लै गोबिन्द मेरा रूप इक्को सतिगुरू ते सतिगुरू मेरा शब्द, तत्त कम्म किसे ना आईआ। आत्म दी धार सदा मेरा मज़हब, परमात्म इष्ट देणा रखाईआ। पर इक्क हैरान होण वाली गल्ल जिस नूं सारयां कहणा गज़ब, भेव आपणा ना किसे खुल्हाईआ। जेहड़ा इशारा दित्ता नानक नूं विच्च अरब, अरबां खरबां तों परे दिता समझाईआ। उस नूं नौं सौ चुरानमे चौकड़ी जुग जिंने शास्त्रां दे अक्खर जे ओनी वार देंदे रहण ज़रब, उहदा हासल समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पुरख अकाल किहा गोबिन्द जिस वेले बीत गिआ अरसा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं पूरन दी धार बणा देवां तेरा सरसा, सरीर बेनज़ीर रूप प्रगटाईआ। मुहम्मद दा पूरा हो गिआ बरसा, बरसी सतिगुर शब्द लए मनाईआ। तेरे ग्रंथां दी पूरन दी धार विच्चों करांगा चर्चा, चरागाहां खोजण कोई ना जाईआ। हुक्म देवागा उतों अरशा, वसावांगा उत्ते फर्शा, फर्शी हो के आपणी खेल खिलाईआ। जिस दीआं वक्खरीआं होणगीआं तर्ज़ां, मेरीआं होणगीआं गर्ज़ां, गरज के दूजा राह ना कोई तकाईआ। नाले अवतारां पैगम्बरां गुरूआं दीआं पूरीआं करांगा अर्ज़ां, अर्ज़ीआं फोलो चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द दे वेंहदिआं वेंहदिआं सरसे विच्च आ गई लहर, लहर लहर नाल टकराईआ। उस ने प्रेम विच्च तूं मेरा मैं तेरा गाया नाल बहिर, बहिरयां दित्ता सुणाईआ। नाले हस्स के किहा गोबिन्द गुणी गहिंदा मेटणी चिन्दा जदों वसणा सोहणयां वसणा तेरा सम्बल शहिर, शहनशाह तेरा डेरा लए लगाईआ। उस वेले ज़रूर दीन दुनी उत्ते वरतेगा कहर, सरसा काहिरे वल ध्यान लगाईआ। इक्क होर ख़बर सुण प्रभू दी सार पा सके कोई ना गैर, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। उस वेले तूं गुरमुखां दे अंदर दी करीं सैर, सैरगाह इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

उस वेले ग्रंथां ने गाउणा इक्क गाणा, बिनां ज़बान हिलाईआ । सरस्सया तूं बण गिआ साड्डा कुतबखाना, कुतबिआं दा झगढ़ा देणा मुकाईआ। तेरे विच्च वेखणा खेल श्री भगवाना, जो भगवन धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को इक्क तराना, इक्को करे पढ़ाईआ। इक्को नूर नुराना, इक्को जोत रुशनाईआ। इक्को घर घराना, इक्को गृह वसाईआ। इक्को होवे मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। असीं चौहन्दे उस दा करीए बिआना, जो बेज़बान अखवाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमी असमानां, इसम आज़म इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा भेव खुल्हाईआ।

गोबिन्द किहा एह खेल निरँकारी, अकल कलधारी आप कराईआ। जिस वेले आवे उस दी वारी, वारता मेरी दए प्रगटाईआ । उस दी कला होवेगी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। ख़बर होवे सभ तों बाहरी, बहरहाल दृढ़ाईआ। उस दे पंजां तत्तां दे पंज होणे लिखारी, पंजा गोबिन्द दा दए गवाहीआ। मेरी आशा पूरी करे सारी, सरसा दी भेटा वाले फेर दए दुहराईआ। जिन्हां विच्च लग मातर घट ना करे कन्नां ते बिहारी, औंकड़ दुलैंकड़ लांव दुलांव बची रहण कोई ना पाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा आ गिआ, पुरख अकाला आ गिआ, खेल खिला गिआ, गोबिन्द सूरा नाल रला गिआ, सम्बल आपणा धाम सुहा गिआ, शब्द शब्दी डंक वजा गिआ, भेव अभेदा भेद छुपा गिआ, बिनां छप्पर छन्न तों वसण वाला पूरन दी छप्परी विच्च आपणा डेरा ला गिआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी सभ ने चलणा विच्च आगिआ, अग्गे हो के आपणा बल ना कोई वखाईआ।(१८ हाढ़ शै सं ७ रात नूं)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

हरि सतिगुर पुरख मनाया, आत्म भया अनन्द। गुर मंतर नाम दृढ़ाया, मिटाई सगली चिन्द। गुरमुख साजन बूझ बुझाया, हरिजन बणाई बणत। मनमुखां दिस ना आया, जग माया पाई बेअन्त। हरि जोती नूर उपाया, शब्द मिलावा साचे कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आदि अन्त।

गुर सतिगुर पूरा सेविआ, नाम निरञ्जण देव। गुर पाया अलक्ख अभेविआ, घर लग्गा साचा नेंह। कलिजुग गाया रसना जिहविआ, दर पाया साचा थाउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, घर साचे घनेरा चाओ।

हरि सतिगुर साचा पारब्रह्म, आदि पुरख अबिनाशा। आदि जुगादी जाणे कर्म, आवे जावे वेखे खेल तमाशा। लक्ख चुरासी तेरे कर्म, तेरे कर्म बल बल जासा। नौं खण्ड वेखे चारे वरन, कवण दवार दासी दासा। भगतन मेला इक्क प्यार, हरि शब्द सच्चा

भरवासा। मनमुख भुल्ले जीव गवार, निर्मल जोत ना दीप प्रकाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपे वेखे आपणी रासा।

हरि सतिगुर साजन पाया, घर घर वज्जी वधाईआ। गुर पूरे मेल मिलाया, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख साचे मंगल गाया, धुन अनादी इक्क वजाईआ। मनमुख मूढ़े जन्म गवाया, नेत्र नैण दरस ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, खेले खेल हर घट थाईंआ।

पारब्रह्म हरि बेअन्त, गुर पूरे राह साचा दस्सया। मेल मिलावा साचे सन्त, गुरसिख दवारे आवे नस्सया। भरम भुलेखा जीव जंत, मनमुख वेखे रैण अन्धेरी मस्सआ। मिले मेल ना साचे कन्त, माया ममता बह बह हस्सया। झूठ विकारा बणया सन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपणी महिमा आपे जाणे खेले खेल आदि अन्त।

हरि हरि सतिगुर साजन मीता, परम पुरख अखवाया। गुर गुर भाणा लागा मीठा, धुर फ़रमाणा रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दवारा इक्क खुल्हाया।

हरि दवारा साचा दर, हरि साचा आप खुल्हाइंदा। सतिगुर पूरा देवणहारा वर, पूरन इच्छया आप कराइंदा। गुरू गुर मेला दए कर, विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरमुख चुकाए आवण जावण डर, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। मनमुख जीव आपणा कीता लैण भर, राए धर्म वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट आवे डर, दहि दिशा सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर तेरा खेल खिलाइंदा।

हरि सतिगुर हरि पारब्रह्म, हरि हरि पुरख अबिनाशा। गुर करता गुर सच कर्म, गुर खेले खेल तमाशा। गुरसिख साचा ना जन्मे ना मरदा, मिल्या मेल शाहो शबाशा। मनमुख जीव लहणा देणा आपणा आपे भरदा, ना कोई घटाए तोला मासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, खेले खेल पृथ्मी अकाशा। (७-३९९ ४००)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
❀ ❀ ❀ ❀ ❀

हरि सतिगुर एका सेवीए, पारब्रह्म करतार। हरि सतिगुर एका सेवीए, आदि पुरख अपार। हरि सतिगुर एका सेवीए, निरगुण जोत अकार। हरि सतिगुर एका सेवीए, अन्त ना पारावार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी सार।

सतिगुर एका सेवीए, देवे साची वत्थ। सतिगुर एका सेवीए, जगत विकारा देवे मथ। सतिगुर एका सेवीए, पंचम पाए नत्थ। सतिगुर एका सेवीए, कर दरस सगल विसूरे जाइण लथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन शब्द जणाए अकथ्थ।

सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता बेपरवाह। सतिगुर पूरा जाणीए, एका एक जपाए नां। सतिगुर पूरा जाणीए, सच दलाला देवे थां। सतिगुर पूरा जाणीए, फड़ हँस बणाए कां। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सखाई पिता मां।

सतिगुर पूरा जाणीए, दीना बंधप दीन दयाला। सतिगुर पूरा जाणीए, घर मन्दर वखाए सची धरमसाला। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क वखाए बेहंगम चाला। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा होए रखवाला। सतिगुर पूरा सेवीए, देवे नाम सच्चा धन माला। सतिगुर पूरा सेवीए, एका दस्से राह सुखाला। सतिगुर पूरा सेवीए, तोड़नहार जगत जंजाला। सतिगुर पूरा सेवीए, नेड़ ना आए काल महांकाला। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम दोशाला।

सतिगुर पूरा सेवीए, सर्ब कला भरपूर। सतिगुर पूरा जाणीए, अठ्ठे पहर हाज़र हज़ूर। सतिगुर पूरा जाणीए, ना नेड़े ना दूर। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े कूड़ो कूड़। सतिगुर पूरा जाणीए, बख्शे चरन साची धूड़। सतिगुर पूरा जाणीए, चतुर सुघड़ मूर्ख मूढ़। सतिगुर पूरा जाणीए, काया चोली रंगण चाढ़े गूड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे सूर।

सतिगुर पूरा जाणीए, साची सिफ्त सलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, आपणे धंदे देवे ला। सतिगुर पूरा जाणीए, पापी गंदे लए तरा। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे हंगता दए मिटा। सतिगुर पूरा जाणीए, साची संगता लए मिला। सतिगुर पूरा जाणीए, खाली मंगता कोई जाए ना। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिख अञ्जणा लए लगा। सतिगुर पूरा जाणीए, मानस जन्म ना होए भंगता, भरमां गढ़ दए तुड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठा।

सतिगुर पूरा जाणीए, साजन हरि गोबिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता गुणी गहिंद। सतिगुर पूरा जाणीए, सदा सदा बख़िशंद। सतिगुर पूरा जाणीए, मिटाए सगली चिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, माण गवाए करोड़ तेतीसा इन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उपजाए साची बिन्द।

सतिगुर पूरा जाणीए, दो जहानां वाली। सतिगुर पूरा जाणीए, धुरदरगाही साचा माली। सतिगुर पूरा जाणीए, फल लगाए काया डाली। सतिगुर साचा जाणीए, दो जहान करे रखवाली। सतिगुर साचा सेवीए, देवे नाम सच दलाली। सतिगुर साचा सेवीए, आदि अन्त ना होया

खाली। सतिगुर साचा सेवीए, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप जोत धर कर, जोत जगाए इक्क अकाली।

सतिगुर साचा सेवीए, परम पुरख अकाल। सतिगुर साचा सेवीए, दीनां नाथ दीन दयाल। सतिगुर साचा सेवीए, साचा घर घर विच्च दए वखाल। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन उपजाए साचे लाल।

सतिगुर साचा सेवीए, बणे धुर संजोग। सतिगुर साचा सेवीए, आत्म रस चुगाए साची चोग। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क कराए निर्मल भोग। सतिगुर साचा सेवीए, सो पुरख निरञ्जण चरन प्रीती देवे साचा जोग। सतिगुर साचा सेवीए, हउमे हंगता दूई द्वैती कढ्ढे रोग। सतिगुर साचा सेवीए, देवे दरस अमोघ। सतिगुर साचा सेवीए, आत्म रस जुगाए साची चोग। सतिगुर साचा सेवीए, पार कराए तीना लोक। सतिगुर साचा सेवीए, एका बख्शे साची मोख। सतिगुर साचा सेवीए, अठ्ठे पहिर ना विआपे हरख़ सोग। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क सुणाए सहागी साचा सच सलोक। सतिगुर साचा सेवीए, पार कराए कोटी कोट। सतिगुर साचा सेवीए, तन नगारे लाए शब्द चोट। सतिगुर साचा सेवीए, माया ममता कढ्ढे खोट। सतिगुर साचा सेवीए, गुरमुख उठाए आलणिउँ डिगे बोट। सतिगुर साचा सेवीए, देवे नाम भंडारा अतोट। सतिगुर साचा सेवीए, कर दरस लक्ख चुरासी जाए छूट। सतिगुर साचा सेवीए, पंचां चोरां कढ्ढे कुट्ट। सतिगुर साचा सेवीए, ठग्ग चोर यार कोई ना सके लुट्ट। सतिगुर साचा सेवीए, फड़ बांहों आप मनाए जो जुग जुग बैठे रुट्ठ। सतिगुर साचा सेवीए, आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी आपे जाए तुट्ठ। सतिगुर साचा सेवीए, नाता तोड़े जूठ झूठ। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लाहा लुट्ट।

सतिगुर साचा सेवीए, पारब्रह्म अचुत। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क सुहाई साची रुत्त। सतिगुर साचा सेवीए, करे प्रकाश माटी बुत्त। सतिगुर साचा सेवीए, गुरसिख बणाए साचे सुत। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्क लगाए साची चोट।

सतिगुर पूरा सेवीए, पारब्रह्म बेअन्त। सतिगुर पूरा सेवीए, मेल मिलाए साचे कन्त। सतिगुर साचा सेवीए, साची सेज सुहाए नारी कन्त। सतिगुर साचा सेवीए, नाम जपाए मणीआ मंत। सतिगुर साचा सेवीए, जुग जुग महिमा गणत अगणत। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क वखाए रुत्त बसन्त। सतिगुर साचा सेवीए, लक्ख चुरासी पार कराए जीव जंत। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आदि अन्त।

सतिगुर साचा सेवीए, वड वड सागर सिंध। सतिगुर साचा सेवीए, वड दाता गुणी गहिंद। सतिगुर साचा सेवीए, शब्दी शब्द मरगिंद । सतिगुर साचा सेवीए, सेवक वेखे ब्रह्मा

विष्न शिव सुरप्त राजा इन्द। सतिगुर पूरा सेवीए, ना मरे ना जन्मे हरख़ सोग ना विआपे चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन आप बख़िशंद।

सतिगुर पूरा सेवीए, हरि साचा शाहो शाबाश। सतिगुर साचा सेवीए, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। सतिगुर पूरा सेवीए, खेले खेल पृथ्मी आकाश। सतिगुर पूरा सेवीए, हर घट अंदर रक्खया वास। सतिगुर पूरा सेवीए, लेखे लाए स्वास स्वास। सतिगुर पूरा सेवीए, सर्ब गुणा गुण तास। सतिगुर पूरा सेवीए, लेखे लाए नाड़ी हड्ड तन रत्त मास। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे मण्डल रास।

सतिगुर पूरा सेवीए, शाहो भूप सुल्ताना। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सद मेहरवाना। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन देवे जीआ दाना। सतिगुर पूरा सेवीए, खेले खेल दो जहाना। सतिगुर पूरा सेवीए, एका देवे धुर फ़रमाना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क वखाए पद निरबाना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क सुणाए अनादी गाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क उपजाए सच तराना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क वखाए सच टिकाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन देवे नाम बिबाना। सतिगुर पूरा सेवीए, चुक्के आवण जाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच निशाना।

सतिगुर पूरा सेवीए, हर घट जोत जगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन साचे वेख वखाए। सतिगुर पूरा सेवीए, मन तन हरया दए कराए। सतिगुर पूरा सेवीए, डंका डौरू इक्क वजाए। सतिगुर पूरा सेवीए, राओ रंकां एका धाम सुहाए। सतिगुर पूरा सेवीए, बार अंका अंक बार जोत जगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, वासी पुरी घनका नाउँ रखाए। सतिगुर पूरा सेवीए, गुरमुख जन जनका लए तराए। सतिगुर पूरा सेवीए, मन मनका दए फिराए। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती तनका दए लगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, दे दरस मन शंका दए गवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन वेख वखाए।

सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा अडोल। सतिगुर पूरा सेवीए, जुग जुग तोलणहारा तोल। सतिगुर पूरा सेवीए, बजर कपाटी देवे खोल्ह। सतिगुर पूरा सेवीए, अनहद वजाए साचा ढोल। सतिगुर पूरा सेवीए, सुरत सवाणी करे चोहल। सतिगुर पूरा सेवीए, गुरमुख काया अंदर जाए मौल। सतिगुर पूरा सेवीए, देवे वड्डिआई उप्पर धौल। सतिगुर पूरा सेवीए, अमृत चवाए नाभ कँवल। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तोल।

सतिगुर पूरा जाणीए, साजण हरि हरि प्रीत। सतिगुर पूरा जाणीइ, काया मन्दर वखाए, सच गुरूदवारा जगत मसीत। सतिगुर पूरा जाणीए, जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत। सतिगुर पूरा जाणीए, सद बैठा रहे अतीत। सतिगुर पूरा जाणीए, सृष्ट सबाई रिहा जीत। सतिगुर पूरा जाणीए, पत्तत्त करे पुनीत। सतिगुर पूरा जाणीए, मिठा करे कौड़ा रीठ। सतिगुर पूरा

जाणीए, चाढ़े रंग मजीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम जगत अनडीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, एका रंग रंगाए हस्त कीट। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख बख्शे चरन प्रीत।

सतिगुर साचा सेवीए, साचा सिरजणहार। सतिगुर साचा सेवीए, अन्त ना पारावार। सतिगुर साचा सेवीए, खोल्हे बन्द किवाड़। सतिगुर साचा सेवीए, मेट मिटाए पंचम धाड़। सतिगुर साचा सेवीए, जोत जगाए नाड़ नाड़। सतिगुर साचा सेवीए, गुर शब्द घोड़े देवे चाढ़। सतिगुर साचा सेवीए, घर साचे देवे वाड़। सतिगुर साचा सेवीए, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। सतिगुर साचा सेवीए, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क वखाए धर्म अखाड़। सतिगुर साचा सेवीए, कर्म रोग दए निवार। सतिगुर साचा सेवीए, साचा शाहो बेऐब परवरदिगार। सतिगुर साचा सेवीए, देवे दरस अगम्म अपार। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेला मेल मिलाए विच्च संसार।

सतिगुर पूरा सेवीए, निरगुण रूप निरञ्जण। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा दर्द दुःख भय भंजन। सतिगुर पूरा सेवीए, नेत्र पाए ज्ञान अंजन। सतिगुर पूरा सेवीए, चरन धूड़ कराए साचा मज़न। सतिगुर पूरा सेवीए, दो जहानी पड़दे कज्जण। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे साचे सज्जण। (७-१६३ १६५)

. . . . . मैं इस नूं स्पष्ट करना चौहन्दा हां जिस भगत नूं इस लिखयां होयां ग्रन्थां दे अक्खरां दे उत्ते छक है वहिम है जां उहदे हिरदे विच्च विचार है कि एह झूठी है अते सानूं झूठे माण ताण दित्ते जा रहे हन . . . . . सानूं कागजां नाल ठुकराया जा रिहा है, जिस ने एह बचन वरतणा होवे उह बिलकुल मेरे मथ्थे ना लग्गे ते ना मैं उस दे मथ्थे लग्गणा चौहन्दा हां। मैं स्पष्ट कहिंदा हां क्यों कि उह मैंनूं नही ठुकरा रिहा मेरे भगवान नूं ठुकरा रिहा है। . . . . . (२६ पोह शै सं ११ दे बचनां विच्चों)